



कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्रधर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

फरवरी 2019

मूल्य 15 रु.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस एवम् बोधोत्सव की शुभकामनाएं



आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज



केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय
आर्य महासम्मेलन 2 फरवरी 2019 ध्वजारोहण की झलकी

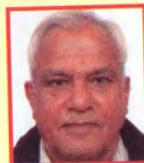


आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें



1073

निदेशक शिवालिक गुरुकुल
अलिबासपुर, जिला-अम्बाला,
हरियाणा



1074

मा. सज्जन सिंह जी दलाल
अध्यापक कॉलोनी, बहादुरगढ़



1075

डॉ. सज्जन कुमार जी मलिक
मलिक क्लीनिक काठमण्डी
बहादुरगढ़

आत्मशुद्धि-पथ के नए संरक्षक सदस्य

श्री मुकेश कुमार जी

सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी, हरेबली दिल्ली

प्रिय बन्धुओं! मास फरवरी में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी मार्च अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-ALLA0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

- व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥



आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

माघ-फाल्गुन

सम्वत् 2075

फरवरी 2019

सृष्टि सं. 1972949119

दयानन्दाब्द 194

वर्ष-18) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी
(वर्ष 49 अंक 2)

(अंक-2

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी' (मो. 9416054195)



सम्पादक:

श्री राजवीर आर्य (मो. 9811778655)



सह सम्पादक:

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)



परामर्श दाता: गजानन्द आर्य



कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री (मो. 08053403508)



उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम
खेड़ा खुरमपुर रोड, फरुखनगर, गुडगांव (हरि.)



सदस्यता शुल्क

संरक्षक : 7100 रुपये

15 वर्ष के लिए : 1500 रुपये

पंचवार्षिक : 700 रुपये

वार्षिक : 150 रुपये

एक प्रति : 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350
डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
राजा होते हुए भी अकेला	6
रिश्ते हो रहे तार-तार और बढ़ते बलात्कार	7
मुक्ति से पुनरावृत्ति	9
उल्लास और शांति	10
कामनाओं का अथाह सागर है 'मन'	13
गृहस्थ में रहते हुए ही त्रि-एषणाओं से छूटने का अभ्यास..	14
गरम पानी अनेक रोगों में दवा है	15
हीरा और जौहरी/हंसो और हंसाओ	16
बढ़ता विज्ञान, बढ़ता अन्धविश्वास	17
हरफूल कैसे महात्मा एवं भक्त फूल सिंह बन गया	20
शूरता की मिसाल पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर	23
ऋषि बोध दिवस पर	26
धर्मवीर हकीकत राय पर विशेष	29
महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी	31
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

यज्ञ भजन प्रवचन अभिनंदन समारोह

झुंजर 15 जनवरी 2019 महर्षि दयानंद शिक्षण केंद्र झुंजर में यज्ञ भजन प्रवचन अभिनंदन समारोह में श्री विजय आर्य पानीपत यज्ञ के ब्रह्मा रहे तथा श्रीमती मामकोर एवं महाशय रतिराम मुख्य यजमान रहे जिला झुंजर की समस्त आर्य समाज के प्रधान श्री ऋषि पाल खेडका गुंजर कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। राजकीय स्नातकोत्तर कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल डॉ एच. एस. यादव मुख्य वक्ता रहे इस अवसर पर डॉक्टर एच.एस. यादव ने बौद्धिक भावनात्मक शारीरिक वार्तालाप आर्थिक धैर्य आदि बलों पर प्रकाश डालते हुए कहा की आत्मिक बल सबसे महान है प्रत्येक बल का अपना महत्व है आत्मिक बल निराकार ईश्वर की उपासना और उसकी आज्ञा का पालन करने से आता है। आत्मिक बल वाला मनुष्य प्रलोभन आने पर भी सत्य मार्ग से विचलित नहीं होता। प्रत्येक की उन्नति में वह अपनी उन्नति समझता है। इस अवसर पर श्री ऋषि पाल आर्य ने बताया कि ईश्वर जीव तथा प्रकृति तीनों अलग-अलग अनादि पदार्थ है तीनों को किसी ने नहीं बनाया। ये हमेशा से थे, हैं और रहेंगे। ईश्वर प्रकृति पदार्थ से जड़ जगत बनाता है। जीव और प्रकृति पदार्थों से चेतन जगत बनाता है। ईश्वर सत्य ज्ञान और जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल देता है। महाशय रतिराम ने अपनी हीरक जयंती पर 6 अक्टूबर 2019 को 251 कुंडीय हवन महोत्सव महान लॉन्स सिलानी गेट झुंजर में निःशुल्क यजमान बनने की प्रार्थना की। आर्य समाज के प्रधान द्वारका प्रसाद, सूर्यप्रकाश, सत्यदेव, उधम सिंह, पंडित जय भगवान आर्य, चमन लाल यादव, श्री भगवान सिंह, मास्टर पन सिंह तथा अध्यापिका सुमित्र व कांता देवी ने मधुर भजन रखें। वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय कंठस्थ याद करने वाले मनस्वी, अनमोल, हर्षिता, जैसमिन, खुशी, दीप्ति आदि होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। ईश्वर की उपासना से आत्मिक बल की प्राप्ति होती है।



बृहद् सद्भावना गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ

प्राचीन शिव मन्दिर काठमण्डी रेलवे रोड, बहादुरगढ़ में आयोजित श्री बाला जी हनुमान मन्दिर सेवा समिति द्वारा भव्य गायत्री महायज्ञ का 14 जनवरी से 20 जनवरी 2019 तक आयोजित किया गया। यज्ञ की विशेषता यह रही की सूर्य उदय होने से सूर्य अस्त होने तक लगातार यज्ञ चलता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी थे जिनको बड़े-बड़े यज्ञ करने व कराने का लम्बा अनुभव है। गायत्री मन्त्र का पाठ शिव स्वामी जी, आचार्य विक्रम देव, रविशास्त्री, ब्र. कर्ण, मा. रामफल आर्य, ब्र. हरिशंकर, श्री भगवान, श्री राजहंस मैत्रेय आदि रहे। सैकड़ों यज्ञ श्रद्धालुओं ने प्रसन्न चित होकर बड़ी श्रद्धा से यज्ञ के अन्दर आहुति प्रदान की। दान दाताओं ने भी खुल कर यज्ञ में सहयोग किया। यज्ञ के अन्दर प्रतिदिन प्रतिष्ठित, यक्तियों का आना जाना लगा रहा। दूर-दूर तक रिश्तेदारों ने भी यज्ञ में भाग लिया। संयोजक श्री सत्यपाल के प्रयासों को सभी ने सराहा। मुख्य रूप से उपस्थिति में उद्घाटन श्री धर्मवीर वर्मा एम.सी. श्रीमती मोनिका गजानन्द गर्ग ने किया, श्री राजकिशन, श्री राज पहलवान श्री उम्मेद सिंह, डरोलिया, सियाराम पुजारी, समिति प्रधान श्री रामेहर गुप्ता व समस्त परिवार व गुरुकुल लोवा कंला की ब्रह्मचारिणियों का योगदान भी रहा। 20 जनवरी रविवार को पूर्णाहुति हुई। इस दिन प्रो. ओम कुमार, मा. ब्रह्मजाति, पूर्व चेयरमैन, अशोक गुप्ता, श्री सत्यनारायण रोहतक, श्री राधेश्याम आर्य, श्रीमती फुलवती, श्रीमती रोशनी देवी, श्रीमती माया देवी, श्रीमती मूर्ति देवी, श्रीमती शान्ता अध्यापिका के भजनों ने समा बांध दिया। अन्त में यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी जी ने कहा की आप सबके सहयोग से ही श्री सत्यपाल जी यह बृहद् यज्ञ का सफल आयोजन करने में सफल रहे हैं। आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। शान्ति पाठ के पश्चात गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वादिष्ट व मधुर भोजन की व्यवस्था भी आयोजकों द्वारा की गई।

- कर्ण आर्य

वितरण किया गया



250 वनवासी एवं गरीब जनों को कम्बल, साड़ी का किया गया वितरण। नर सेवा नारायण सेवा को साकार करता आपका यह गुरुकुल आमसेना आदिवासी बहुल क्षेत्र कालाहाण्डी (नवापारा) में आप सभी के सहयोग से इन सभी कार्यों को करने में समर्थ हो पा रहा है।

वसंत ऋतु

जब आती बसन्त ऋतु प्यारी
फूलों से लद जाती क्यारी
ललचा जाये रचियता भी
ऐसी प्यारी रचना सारी
आमों पे कूकती कोयलिया
और मोर नाचते छतों में

मेहनत करते हैं नर-नारी
सोना उगले, धरती प्यारी
भण्डार भरें आनाजों के
जब पक जाती फसलें सारी
फिर नाचते गाते मतवाले
ढपली लेकर के बाहों में

नगरों सा यहां पर शोर नहीं
जीवन ऐसा कहीं और नहीं
दुल्हन सी सजी हुई धरती
होती ऐसी कहीं और नहीं
नव यौवन सी चंचल नदियां
और लोक गीत है नावों में

- कवि कृष्णा 'सौमित्र' साहित्यलंकार
मो. 8901272846

स्व. श्री इन्द्रसिंह सहवाग का मनाया स्मृति दिवस



श्रीमती चन्द्रो देवी ने आत्मशुद्धि आश्रम परिसर में दिनांक 11.01.2019 अपने सुपुत्र श्री जगदीश कुमार योगाचार्य इनकी पत्नी श्रीमती पूनम की उपस्थिति में स्मृति दिवस मनाया। यज्ञोपरान्त परिवार की तरफ से उत्तम भोजन की व्यवस्था भी की गई थी। इस अवसर पर श्री जयभगवान, जयकिशन बहन समेश व सुदेश मामा रणधीर सिंह सहरावत, मामी जी, इनके मित्र विनय दलाल बेटी जागृति सहवाग व पुत्र हिमांशु सहवाग उपस्थित रहे। कुछ दिन के पश्चात पुत्र हिमांशु सहवाग अब इस दुनिया में नहीं रहे। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और दुःख की घड़ी में परमपिता परमात्मा परिवार को धैर्य प्रदान करें। स्वामी धर्ममुनि जी ने परिवार को उपदेश दिया कि आपको स्व. श्री इन्द्र सिंह जीवन से प्रेरणा, प्राप्त करनी चाहिए यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उनके सुपुत्र योगाचार्य श्री जगदीश जी ने सभी का धन्यवाद किया।

51वां वार्षिक महोत्सव

आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल आश्रम आमसेना का 51वां वार्षिक महोत्सव दिनांक 16, 17, 18 फरवरी 2019 को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर देश के अनेक आर्य संन्यासी, आर्यनेता, विद्वान, आर्य भजनोपदेशक, राजनेतागण पधार रहे हैं अतः आप सभी सादर आमन्त्रित हैं उत्सवों में पधारकर धर्म लाभ उठाएं और हमारा उत्साह बढ़ाएं।



राजा होते हुए भी अकेला

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्,
एकोयासि सत्पते किं त इत्था।
सं पृच्छसे समराणः शुभानैः,
वोचेस्तनो हरिवो यत्त अस्मे॥

ऋग् 1.165.3

ऋषिः मरुतः। देवता इन्द्रः। छन्दः त्रिष्टुप्।
(इन्द्र) हे परब्रह्म परमात्मन्! (त्वं) तू (महिनः
सन्) महान् होते हुए भी (कुतः) क्यों (एकः)
अकेला (यासि) चलता है? (सत्पते) हे सत्पति!
(किं) क्यों (ते) तेरा (इत्था) ऐसा (व्यवहार) है
(तू) (समराणः) (हमसे) मिलकर (शुभानः)
शोभन वचनों से (सं पृच्छसे) कुशल-क्षेम पूछता
है। (हरिवो) हे मनोहर गुणोवाले! (यत्) जो (ते)
तेरा (अस्मे) हमारे प्रति (कर्तव्योपदेश है), (तत्)
वह (नः) हमें (वोचेः) कह।

संसार में हम देखते हैं कि जो जितना अधिक प्रतिष्ठित और महान् होता है, उतने ही अधिक कर्मचारी और सेवक उसके साथ विद्यमान रहते हैं। किसी राजा की जब सवारी निकलती है, तो अमात्य, परमशर्दाता, प्रधान अंगरक्षक, सुरक्षा-सैनिक आदि सैकड़ों लोग आगे-पीछे चलते हैं। परन्तु हे परब्रह्म परमात्मन्! तुम विश्व के महान् चक्रवर्ती सम्राट होते हुए भी एकाकी विचरते हो, इसमें क्या रहस्य है? क्या तुम्हें अंग रक्षकों और सहायकों की आवश्यकता नहीं है? क्या तुम्हें किसी का भय नहीं है? तुम जो अपने विश्व-साम्राज्य के दौरे करते हो, व्यवस्था देखते हो, समुचित प्रबन्ध करते हो, वह सब तुम अकेले कैसे कर लेते हो? तुम भी प्रदर्शन के लिए ही सही, अपने साथ सैकड़ों अनुचरों को साथ लेकर क्यों नहीं चलते? नहीं, हम भूल करते हैं। तुम तो 'सत्पति' हो, श्रेष्ठ के लिए पराश्रित क्यों होगा? तुम्हें किसी का भय नहीं है, कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता। अतएव तुम शोभा के साथ एकाकी विचरत हो।

हे मेहन्द्र! तुम सम्राट हो, हम तुम्हारी प्रजा हैं। तुम हमसे मिलकर प्यारभरे शुभ वचनों से हमारा कुशल-क्षेम पूछते हो, हमारे सुख-दुःख का प्रतिवेदन

सुनते हो, हमारे कर्मों एवं आचरणों को देखते हो, सत्कर्मों के लिए हमें उत्साहित करते हो और जहाँ कहीं त्रुटि देखते हो उसके सुधार की प्रेरणा करते हो। तुम 'हरिवान्' हो, मनोहर गुण-कर्मों-वाले हो। हमारी तुमसे प्रार्थना है कि हमारे प्रति तुम्हारा जो कर्तव्योपदेश है उसे तुम हमें सदा कहते रहो। जब कभी हम कुराह पर चलने लगें, तब तुम मार्ग-दर्शक बनकर हमें कर्तव्य-पथ पर अग्रसर करते रहो। जिसके प्रति हमारा जो कर्तव्य है, वह तुम हमें निर्दिष्ट करते रहो। अन्यथा कुसंगति आदि में पड़कर हम मार्ग-भ्रष्ट हो जायेंगे और न अपना कल्याण कर पायेंगे, न ही जग को कल्याण दे पायेंगे। हे राजा होते हुए भी अकेले रहने वाले देवाधिदेव! हम तुम्हारा ही आश्रय पकड़ना चाहते हैं, क्योंकि वे बड़े लोग भला हमें क्या सहारा दे सकेंगे जो स्वयं अपनी रक्षा के लिए परावलम्बी बने हुए हैं।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सम्बन्धों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

रिश्ते हो रहे तार-तार और
बढ़ते बलात्कार

पहले हमारे देश में सम्मिलित परिवारों का प्रचलन था, विशेषतया गांवों में। आज से 50 वर्ष पहले तक यह प्रथा प्रचलित रही और उस समय हमारे देश में गांवों की आबादी बहुत ज्यादा होती थी और मुख्य व्यवसाय कृषि और पशुपालन ही होता था। यह दोनों व्यवसाय संयुक्त रूप से काम करने के रहे हैं। ज्यों-ज्यों भौतिक उन्नति होती गई नगरों की संख्या बढ़नी शुरू हो गई और आधुनिक मशीनरी सिस्टम ने दस व्यक्तियों का कार्य एक द्वारा किया जाने पर दुसरा घर के मुखिया द्वारा पक्षपात करने और लोभ-लालच के द्वारा आपसी सद्भाव बिगड़ कर परिवारों का बिखरना शुरू हो गया। आज स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि कोई भी रिश्ता पवित्र नहीं रह गया है। भूमि के एक छोटे से टुकड़े के लिए पुत्र अपने माता-पिता की हत्या तक कर देता है। भाई अपने सगे भाई का दुश्मन बन बैठा है। हमारे देश की अदालतें भाई-बहीन और आपसी परिवारों के मुकदमों से भरी पड़ी हैं। आपसी सोहार्द व सद्भावना लगभग समाप्त होते जा रही है। सम्मिलित परिवार की परिभाषा हम यह मानते हैं कि चौथी पीढ़ी तक एक परिवार इकट्ठा रहे लेकिन वर्तमान में परिस्थितियाँ ऐसी बनती जा रही हैं कि सन्तानें माता-पिता को भी साथ रखने के लिए तैयार नहीं हैं। भाईयों के साथ इकट्ठा रहना तो अब स्वप्न समान हो गया है। रामायण कालीन समय पर विचार कीजिए आपस में चारों भाईयों का परस्पर कितना प्यार था। चक्रवृत्ति साम्राज्य से ज्यादा बड़ा प्रलोभन इस विश्व में कोई नहीं होता लेकिन फुटबाल की गेंद की तरह चारों भाईयों ने ठोकर मार दी। पांचों भाई पांडवों में भी अपार स्नेह मिलता है बड़े भाई युधिष्ठिर द्वारा भयंकर अधर्मयुक्त कदम उठाने पर भी उसे तू तक नहीं कहा। दुर्योधन भी अपने भाईयों से तो प्रेम रखता था लेकिन वह द्वेषाग्नि का शिकार था। इसलिए पांडवों के प्रति ईर्ष्या-द्वेष की भावना रखता था जो महाभारत युद्ध का कारण

बनी। जब से मुस्लिम और ईसाई संस्कृति का अभ्युदय हुआ है तब से ही संयुक्त परिवारों का और टुटना आरम्भ हो गया है और आज हमारा समाज पारिवारिक दृष्टि से बहुत ही खतरनाक मोड़ पर आ पहुंचा है। हमने सुना है कि अमेरिका आदि देशों में 18 वर्ष की आयुपरान्त लड़का या लड़की अपने माता-पिता के साथ नहीं रहते हैं और बहुत कम पति-पत्नी इकट्ठा रहते हैं। आपस में संवाद की बहुत कमी रहती है। उन देशों का अनुशासन, नियमों का पालन करना, वफादारी व ईमानदारी आदि गुणों को तो हम अपना नहीं रहे उनमें व्याप्त दुर्गुणों को हम अपना कर बड़ा माडर्न अपने को समझते हैं। हमारे भजानोपदेशक एक प्रसंग प्रायः सुनाया करते हैं कि एक माता ने अपने पुत्र से दुःखी होकर कहा कि बेटा मैंने तेरे को 9 मास तक गर्भ में रखा और बड़े कष्टों से पाला तो लड़का प्लट कर उतर देता है कि इसमें कौन सा अहसान है 9 महिने जो तूने मुझे गर्भ में रखा तू उसका किराया ले ले हिसाब बराबर हो जायेगा। यह स्थिति आज बनती जा रही है। आज श्रवण कुमार की माता-पिता की भक्ति और सेवा महज एक कहावत बन कर रह गई है। अगर हम अपने प्राचीन इतिहास को पढ़ते हैं तो हमें आपसी रिश्तों के ज्ञान के साथ गर्व भी होता है। आज आपसी सम्बन्धों में जमीन आसमान का अन्तर आ गया है। यह संक्षेप सी चर्चा हमने आपसी संबंधों को लेकर की। अब समाज के अन्दर जो सबसे घृणित व गंभीर समस्या है वह है बढ़ते बलात्कार। ऐसा कोई दिन नहीं जाता जब अखबारों में बलात्कार की कोई खबर ना छपती हो। 2 साल की बच्ची से लेकर 80 वर्ष की वृद्धा तक इस ऋषि-मुनियों की भूमि पर सुरक्षित नहीं है। हृदय रो पड़ता है जब यह सुनने में आता है कि एक माता अपनी जवान पुत्री को बाहर जाते समय अपने शराबी पति से सुरक्षित रखने के लिए अपने पड़ोसी की देवी के पास छोड़कर जाती है, और वापस घर लोट आने पर पुत्री

को घर पर बुला लेती है। यह एक दरिन्दगी की, हैवानियत की झलक पाठकों के समक्ष रखी है। ना जाने कितने दुष्कर्म होते हैं जिसे देखकर लज्जा भी आत्म हत्या का विचार बना रही है कि ना रहे बांस और ना बजे बांसुरी। लेकिन हताश और निराशा से तो कार्य बनेगा नहीं, इसका कोई न कोई उपाय निकालना होगा और मेरी दृष्टि में तीन मुख्य उपाय हैं जिनसे इन धिनौने और समाज को कलंकित करने वाले कृतों से बचा जा सकता है। प्रथम उपाय है सुशिक्षा जिसके माध्यम से हम संस्कारिता, चरित्रवान और संयमी युवकों व युवतियों को तैयार कर सकें। हमारा पाठ्यक्रम और दिनचर्या वैदिक हो, इसके साथ-साथ अन्य भाषाओं का ज्ञान करवाना कोई गलत बात नहीं है। द्वितीय सहशिक्षा को समाप्त करके लड़के-लड़कियों की शिक्षा अलग-अलग होनी चाहिए। ऋषि दयानन्द भी अलग-अलग विद्यालयों के पक्षधर थे। सहशिक्षा के माध्यम से हमारे बच्चों का चरित्र बिगड़ता है। आप देख सकते हैं आज कैसा वैचारिक प्रदूषण हमारे समाज में फैला हुआ है। जिससे हमारी बेटियों के लज्जा रूपी आभूषण को क्षति पहुँच रही है। तीसरा उपाय जो हमारे मतानुसार है वह है कठोर दण्ड व्यवस्था। कठोर दण्ड व्यवस्था के साथ-साथ न्याय प्रणाली का निर्णय शीघ्र होना चाहिए। कहावत है Justice delay means Justice denied. किसी भी तरह के अपराध का फैसला शीघ्र होना चाहिए ना होने पर अपराधी के विरुद्ध साक्ष्य कमजोर और समाप्त होने पर खतरा बना रहता है। बलात्कार जैसे मामलों में जो पिछले वर्ष 20 सितम्बर 2018 को मुख्य पृष्ठ पर खबर पढ़ी कि हिसार के उकलाना कस्बे में एक छह साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म करने वाले किशोर को 20 साल की सजा सुनाने के साथ-साथ 80 हजार रुपये जुर्माना भी लगाया। न्यायधीश श्री डी.एस. चालिया ने कहा कि अगर अभियुक्त नाबालिग नहीं होता तो अदालत उसे सजा-ए-मौत ही सुनाती। उसी दिन के दैनिक भास्कार में 81वें दिन ही चार वर्षीय बच्ची के दुष्कर्म को फांसी की सजा सुनाई। इसमें उल्लेखनीय बात यह है कि पुलिस के चालान पेश

करने के 47 दिन बाद ही पांच पेशियों में यह फैसला सुना दिया। यह फैसला न्यायधीश श्री दिनेश शर्मा जी ने सुनाया 27 अगस्त 2018 को अखबार पढ़कर महाराज मनु का संविधान स्मरण हो गया मध्यप्रदेश के मंदसौर के दोषियों को फांसी की सजा सुनाई और उज्जैन की जज तृप्ति पांडे ने तो महज 6 घंटे में एक नाबालिग को दो साल की सजा सुना दी। इन फैसलों की हमारे देश के प्रधानमंत्री ने मन की बात में भी तारीफ की। हमारा यह मानना है कि दुष्कर्मों को शीघ्र ही कड़ी से कड़ी सजा दी जाये तो इस तरह की हैवानियत पर अंकुश लग सकता है। रामायण के अन्दर हनुमान का चरित्र पढ़िये चित प्रसन्न हो जायेगा। जिसमें रावण के महल में अर्धनग्न स्त्रीयों के देखने के पश्चात भी रत्ती भर विकार मन में नहीं आया। हमने कुछ आकड़े प्राप्त किये जो 2016 के हैं। इस एक साल में 38947 केस बलात्कार के रजिस्टर्ड हुये। यद्यपि ये आकड़े सही नहीं हैं। वास्तविकता तो इससे और आगे हैं। अन्त में हमारा तो यही कहना है कि हमारी बेटियाँ भी साधारण वेश-भूषा और उत्तम चरित्र वाली हो तो भी बहुत कुछ हद तक इन धिनौनी हरकतों पर लगाम लग सकती है। अगर निति के इस वचन का हम पालन करें तो फिर उपरोक्त विषयों की कोई समस्या नहीं रहेगी।

मातृवत परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत।

आत्मवत सर्व भूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः॥

(जो दुसरो की स्त्रियों को माता, बहन की दृष्टि से देखते है। दुसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान और दुसरे लोगों को अपने समान देखते है। उनका चरित्र उच्च होता है किसी को भी उनसे भय नहीं रहता है। सदाचार का पालन करने से उनकी आयु भी लम्बी होती है।)

सम्पादकीय लिखते-लिखते खबर पढ़ी की बलात्कारी बाबा राम रहीम सिंह को एक पत्रकार रामचन्द्र छत्रपति की हत्या के दोष में जीवन पर्यन्त जेल में ही रहने की सजा सुनाई। इस फैसले के लिए माननीय जज जगदीप सिंह व जाँच एजेंसी सी.बी.आई को आत्मशुद्धि पथ पत्रिका के पाठकों की तरफ से हार्दिक शुभकानाएँ।

-राजवीर आर्य

मुक्ति से पुनरावृत्ति

- महात्मा चैतन्यस्वामी

मुक्ति क्या है? इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश (नवां समुल्लास) में प्रश्न उठाया- 'मुक्ति किसको कहते हैं? उत्तर- 'मुञ्चन्ति पृथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्तिः', जिसमें छूट जाना हो, उसका नाम 'मुक्ति' है। प्रश्न- किससे छूट जाना? उत्तर- जिससे छूटने की इच्छा सब जीव करते हैं। प्रश्न- किससे छूटने की इच्छा करते हैं? उत्तर- जिससे छूटना चाहते हैं। प्रश्न- किससे छूटना चाहते हैं? उत्तर- दुःख से। प्रश्न- छूटकर किसको प्राप्त होते हैं और कहाँ रहते हैं? उत्तर- सुख को प्राप्त होते और ब्रह्म में रहते हैं। आगे उन्होंने प्रश्न उठाया- 'मुक्ति और बन्ध किन-किन बातों से होता है? उत्तर- परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म-अविद्या-कुसंग-कुसंस्कार बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण परोपकार विद्या पक्षपातरहित न्याय-धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति-प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने-पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सब से उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपातरहित न्यायधर्मानुसार ही करे, इत्यादि साधनों से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा-भंग करने आदि काम से बन्ध होता है।' ब्रह्म को प्राप्त करके जीवात्मा उसी में विलीन हो जाता है या उसका अलग से कोई अस्तित्व बना रहता है, इस सम्बन्ध में भी हम पहले महर्षि जी का ही कथन प्रस्तुत करना चाहते हैं। वे सत्यार्थप्रकाश (नौवां समुल्लास) में प्रश्न उठाते हैं- 'मुक्ति में जीव का लय होता है, वा विद्यमान रहता है? उत्तर- विद्यमान रहता है। प्रश्न- कहाँ रहता है? उत्तर- ब्रह्म में। प्रश्न- ब्रह्म कहाँ है? और वह मुक्त जीव एक ठिकाने रहता है, वा स्वेच्छाचारी होकर सर्वत्र विचरता है? उत्तर- जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है, उसी में मुक्त जीव अव्याहतगति अर्थात् उसको कहीं रूकावट नहीं। विज्ञान आनन्दपूर्वक स्वतन्त्र विचरता है।'

सत्यार्थप्रकाश (सातवां समुल्लास) में वे प्रश्न उठाते हैं- 'ब्रह्म के सत् चित् आनन्द और जीव के अस्ति भाति प्रियरूप से एकता होती है। फिर क्यों खण्डन करते हो? उत्तर- किंचित साधर्म्य मिलने से एकता नहीं हो सकती। जैसे पृथिवी जड़ दृश्य है, वैसे जल और अग्नि आदि भी जड़ और दृश्य हैं, इतने से एकता नहीं होती। इनमें वैधर्म्य-भेदकारक अर्थात् विरुद्ध धर्म, जैसे गन्ध, रूक्षता, काठिन्य आदि गुण पृथिवी और रस द्रवत्व, कोमलत्वादि धर्म जल, और रूप दाहकत्वादि धर्म अग्नि के होने से एकता नहीं। जैसे मनुष्य और कीड़ी आँख से देखते मुख से खाते (और) पग से चलते हैं, तथापि मनुष्य की आकृति दो पग और कीड़ी की आकृति अनेक पग आदि भिन्न होने से एकता नहीं होती। वैसे परमेश्वर के अनन्तज्ञान आनन्द बल क्रिया निर्भ्रान्तित्व और व्यापकता जीव से और जीव के अल्पज्ञान, अल्पबल, अल्पस्वरूप सब भ्रान्तित्व और परिच्छिन्नातादि गुण ब्रह्म से भिन्न होने से जीव और परमेश्वर एक नहीं। क्योंकि इनका स्वरूप (परमेश्वर अतिसूक्ष्म और जीव उससे कुछ स्थूल होने से) भिन्न है।

छान्दोग्य उपनिषद् (8-3-4) के अनुसार- 'परं ज्योतिरूपसम्पद्य स्वेन रूपणाभिनिष्पद्यते।' अर्थात् जीवात्मा उस परम ज्योति को प्राप्त होकर अपने रूप में बना रहता है। तैत्तिरीयोपनिषद् में (ब्र.व. 1-1) भी कहा गया है- सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहाया परमे व्योमन्। सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति। अर्थात् जो हृदयाकाश में स्थित अविनाशी, चेतनस्वरूप तथा सर्वव्यापक ब्रह्म को जान लेता है वह सर्वज्ञ ब्रह्म का साथी हो जाता है और साथी रहते हुए सब प्रकार से तृप्त रहता है। सांख्यकार का कहना है- भोक्तृभावात् (1-143) सुख-दुःख का भोक्ता होने से भी जीव ब्रह्म से भिन्न है।

(शेष अंगले अंक में)

उल्लास और शांति

- यशवर्मा

येते पवित्र मूर्मयोऽमिक्षयरन्ति धारया।

तेमिर्नः सोम मृडय॥ ऋ. 9.61.5।

आज हम ऋग्वेद के इस मन्त्र के दूसरे भाग पर विचार करेंगे। तेमिर्नः सोम मृडय, अर्थात् हे सोम, उन तरंगों से हमें आनन्दित कर दें। कितनी अच्छी प्रार्थना की गई है प्रभु से कि हमें आनन्दित कर दो। मनुष्य के जीवन में आनन्द तभी आएगा जब उसका हृदय उल्लास से भरा हुआ होगा और मन में शांति होगी। यहां पर हम उल्लास और शांति की कुछ चर्चा करते हैं।

मानव जीवन में उल्लास का बहुत महत्व है। जिसके जीवन में उल्लास है उसके जीवन में उमंग है, उत्साह है, प्रसन्नता है। अपने जीवन को एकगीत से, संगीत से, भजन से ऐसा भर दो कि आपका मूढ़ सदा उत्तम, बढ़िया, अच्छा बना रहे। अपने मूढ़ को इतना कमजोर मत बनाओ कि अपनी जिन्दगी को ही कमजोर बना बैठे। बल्कि अपनी जिन्दगी में ऐसी व्यवस्था बना लो कि हम वो हैं जो हवाओं का रुख बदलना जानते हैं। यानि हम ऐसे साहसी बनें जो हताश-निराश परिस्थितियों को भी उल्लास में बदलना जानते हैं, रूलाती घड़ियों में भी खिलखिलाहट को पैदा करना जानते हैं। यदि ऐसा मन बना लोगे तो कोई भी परिस्थिति आपको नीचे नहीं गिरा सकती। यदि गिर भी गए तो भी कोई बात नहीं। गिरना कोई बुरी बात नहीं, हां, गिरे रहना बुरी बात है। बच्चा कितनी बार गिरता है उसे याद नहीं होता इस बात का कि बचपन में कितनी बार गिरा था। आपको याद नहीं होगा कि कितनी बार गिरे बचपन में लेकिन जितनी बार गिरे उतनी बार तेजी से उठे। क्योंकि ऊपर उठने का अभ्यास जारी रखा, परिणाम क्या हुआ, आप तेजी से दौड़ना सीख गए बड़े होना सीख गए। इसलिए गिरना बुरी बात नहीं है बल्कि ऊपर उठ जाना बड़ी बात है। हार जाना बड़ी बात नहीं है, हारकर जीतने के लिए मनोबल बढ़ा लेना बड़ी बात है।

जीवन में गिर भी जाए तो भगवान से मांग लेना, प्रार्थना कर लेना कि हमें ऊपर उठने की शक्ति देना,

हमें वो जीवनी शक्ति लौटा दो, जिससे हमारा मन, जो हताश-निराश हो जाता है, उसे फिर से आशान्वित कर सकें। हमारे ग्रन्थों में कहा गया है कि आगे बढ़ने के लिए ऊपर उठने के लिए भगवान ने हमें यह मानव जीवन दिया है। इसलिए समय-समय पर अपने आपको चौंक करते रहिए कि पहले से शांति बढ़ी है या घटी है, पहले से मधुर हुआ हूँ या कड़ा, पहले से उत्साहित हुआ हूँ या हतोत्साहित पहले अधिक मुस्कराता था या अब कम मुस्कराता हूँ, पहले अच्छा था या अब अच्छा हूँ। अब कुछ गड़बड़ तो नहीं है। यदि कुछ गड़बड़ है तो अपने आपको ठीक करिये पहले से बेहतर बनने का प्रयास करें। भगवान ने इतने अच्छे दांत दिए हैं, इन्हें हंसते, मुस्कराते हुए दिखाईए खुश रहिए। दांत नहीं, हंसी तो फिर भी आ सकता है, खुश रहा जा सकता है। एक बहुत बड़े सन्त हुए हैं जिन्होंने देहरादून तपोवन में वैदिक साधना आश्रम की स्थापना की व बहुत सी रूचिकर मार्गदर्शक पुस्तकें भी लिखी-वह लिखते हैं कि जोर से हंसो, सोसाईटी में नहीं हंस सकते तो अकेले हंसो, बन्द कमरे में हंसो, नहीं तो बाथरूम में हंसो, वहां भी नहीं हंस सकते तो रजाई में हंसो, परन्तु हंसो अवश्य। इसी प्रकार उच्च कोटि के संत महात्मा प्रभु आश्रित जी लगभग 50 वर्ष पहले हमारे घर पर आए तो हमें खूब हंसाते थे। वर्तमान में स्वामी केवलानन्द जी जो प्रतिदिन 12-13 घंटे साधना, समाधि में रहते हैं, सदा प्रसन्न दीखते हैं। कहने का भाव है कि हम प्रभु से जुड़े तो मन उल्लासित हर्षित रहता है।

आज के युग में तो मोबाइल ने मनुष्य को अकेला ही कर दिया है। घंटो-घंटो मोबाइल पर बात कर रहे हैं और वह भी ऐसे जैसे लड़ रहे हो। सभा में बैठकर कई लोग मोबाइल पर वाट्सअप, फेसबुक चला रहे हैं। भीड़ में बैठकर भी अकेले हो गए हैं। फिर तनाव का शिकार हो जाते हैं कई लोग। फेसबुक पर लाईक-डिसलाईक करते हैं। फेसबुक पर बहुत दोस्त हैं पर वास्तव में कोई दोस्त नहीं और यहां तक कि घर के सदस्यों से भी अलग अलग हो गए हैं।

ऐसे में मुसीबत तो फेस टू फेस आती है और कहती है मिला पंजा। ऐसे में हिम्मत टूट जाती है। इन चक्करों में ज्यादा न पड़े। जो व्यक्ति सामने हैं, उनसे मिलकर हंसे, मुस्कुराएँ खुश रहें। जिन्दगी को पूरी शक्ति से जियो और सदैव तरौताजा बने रहो।

कुछ लोग गिरे हुए होते हैं पर मानते नहीं हैं, कुछ लोग हारे हुए होते हैं पर मानते नहीं हैं, कुछ लोग पिछड़े हुए होते हैं पर मानते नहीं हैं, कुछ लोग भीड़ में खोए हुए होते हैं पर खोया हुआ मानते नहीं हैं। वे यह जानते हैं कि जो आगे बढ़े हुए लोग हैं वे वक्त का बहुत ध्यान रखते हैं। वे जल्दी उठकर अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करते हैं। अपनी आत्मा मन शरीर का बल बढ़ाने के लिए आत्मिक, मानसिक, शारीरिक उन्नति के लिए प्रयास करते हैं। मन से हारा हुआ व्यक्ति पहले बिस्तर पर हारता है, प्रातः उठता ही नहीं और फिर द्वारा ही रहता है। जीतने वाला व्यक्ति बिस्तर पर जंग जीतता है और फिर अपने कर्तव्य क्षेत्र में भी जीतता चला जाता है और एक सफल व्यक्ति बनता है।

हम ज्यादा समय रीयल लाईफ में जीते हैं। घर में घुसते ही सबसे पहला काम टी.वी. चलाना होता है। नाटक, पिकचर, न्यूज, बहस बार-बार देखे जा रहे हैं। जिसकी कोई सीमा ही नहीं है। रीयल लाईफ से निकल कर रियल लाईफ जीना सीखें। बच्चों के साथ, पति-पत्नी के साथ, माता-पिता के साथ समय बिताएं व प्रसन्नता का वातावरण घर में बनाएं।

जिन्दगी में जीतना है, सफल होना है तो आराम को छोड़ना होगा। जो आराम छोड़ देता है, दुनिया उसे ही सलाम करती है। जो कम्फर्ट जोन से बाहर आता है और जीवन में कुछ रिस्क उठाने को तैयार होता है, जिन्दगी का आनन्द उसी के लिए है। जीवन का आनन्द लेने के लिए अपने आप में कुछ परिवर्तन लाना होगा। अच्छी आदतें मुश्किल से सीखने में आती हैं, सीख गए तो मुश्किलों को आसान कर देती हैं लेकिन बुरी आदतें आसानी से आती हैं और जिन्दगी को मुश्किल में डाल देती हैं। इसलिए हम अपने हैबिट पैटर्न पर यदा कदा अवश्य विचार करते रहें ताकि हमारे जीवन का उल्लास, उत्साह बढ़ता रहे।

आपके जीवन में उल्लास तभी होगा जब आपके

मन में शांति होगी। उल्लास और शांति कोरिलेरिड हैं। गीता, जो हिन्दु समाज का अनमोल ग्रन्थ है जिस पर कोर्ट में भी हाथ रखकर कसम खाई जाती है, हमें प्रसन्नता, सुख समृद्धि, शांति का संदेश देती है और इनको पाने के साधन बताती है। यदि आप अपनी समस्याओं, परिस्थितियों को जीतना चाहते हो तो गीता की ओर जाना चाहिए क्योंकि गीता के कारण ही बारह वर्ष तक वन में खाक छानने के बाद उन्हें साम्राज्य मिल पाया था जबकि वह शक्तिशाली, बुद्धिमान थे, धर्म को जानने व मानने वाले थे परन्तु नसीब खुल नहीं पा रहे थे। गीता प्रकट होना चाहती थी। भगवान श्रीकृष्ण जी के मुख से, मानव मात्र के लिए, अर्जुन तो माध्यम मात्र था। गीता से पांडवों का भाग्य जागा, सम्मान, समृद्धि, साम्राज्य सब मिला। यदि आप भी शांति सुख, समृद्धि, सफलता, धन, ऐश्वर्य, आनन्द, उल्लास, मोक्ष चाहते हैं तो गीता को सुनो, पढ़ो। गीता को जियो, गीता को जीवन में उतार लो। गीता कायर मन को शक्तिशाली बना देती है, मनुष्य में वीरता का संचार कर देती है। गीता जन्म-मरण दोनों को सुधार देती है। हमारे पंच क्लेशों अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष व अभिनिवेश को दूर करके हमें शांति प्रदान करती है।

मन में शांति होगी तो खुशी टिकेगी घर में, कारोबार, मोहल्ला, नगर, प्रदेश, देश, विश्व में। सब और उन्नति होगी और खुशी का साम्राज्य होगा। पहले शांति होगी फिर सुख होगा। शांति नींव है जिस पर सुख की दीवार टिकेगी। प्रभु के ध्यान, आपसी प्रेम और एकता से ही शांति आती है। मिट्टी की एकता से ईंट बनती है, ईंट की एकता से दीवार, दीवारों की एकता से घर, घरवालों की एकता से खुशहाली आती है। घर का आधार प्रेम, प्रेम का आधार सुख, सुख का आधार शांति है।

गीता के अध्याय 6 में श्लोक 27 इस प्रकार है:- प्रशांत मनसं होनं योगिनं सुख मुत्तमम्। उपैतिशांत रजसं ब्रह्म भूतम् कल्मषम्॥

अर्थात् जिसका मन भली प्रकार शांत है और पाप से रहित है जिसका तम व रज शान्त हैं, उसे ही आनन्द प्राप्त होता है। आपके मन में लम्बे समय तक टिकने वाली शांति आ जाए और यह तभी सम्भव है जब आप ब्रह्म के साथ, परमात्मा जो सत्य स्वरूप

अर्थात् नित्य है, चेतन है और आनन्द स्वरूप है, उसके साथ निरन्तर जुड़े रहेंगे। लेकिन आप तो माया के साथ जुड़े हुए हैं जो कभी साथ नहीं देती। यह माया तो अनित्य है। आज है कल नहीं है। यह शरीर जिसे हम अपना मानते हैं यह भी साथ नहीं देता तो माता, पिता, भाई बन्धु, पति, पत्नी, पुत्र, पुत्री, धन-दौलत, कार कोठी कहां साथ देने वाले हैं। सब अनित्य है। किसी कवि ने कहा है:-

माया संग न चले, काया संग न चले,
ओ३म् नाम संग संग ही चले।
फिर यह हीरा जन्म मिले न मिले,
ओ३म् नाम संग-संग ही चले॥

भौतिकता की ओर तो आप सदा अग्रसर रहते हैं। अध्यात्म को भी अपने जीवन का अंग बना लो। तप-स्वाध्याय-सत्संग दान-यज्ञ प्रभु के प्रति सदैव कृतज्ञता का भाव, यह चीजे अब हमारे जीवन में आ जाए। क्योंकि:-

बचपन खेल कूद में गंवाय
जवानी में प्रभु प्रेम न भाया
गई जवानी आया बुढ़ापा
काया ने अपना रंग दिखाया
आंख नाक कान हुए जब ढीले
तन की काया मुरझाई
क्यों झूठे जंग में मन भरमाया
हीरे जैसा जन्म गंवाया

जीवन के जिस पड़ाव में भी आप है, प्रभु की ओर कदम बढ़ा दें तो जीवन सार्थक हो जाएगा, जीवन में शांति सुख और आनन्द बना रहेगा और आप उल्लास से भरे रहेंगे।

ओ३म् के ही ध्यान से और
ध्यान से ही योग तक,
जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक,
यह ओ३म् ही पहुंचाएगा।

-मन्त्री, आर्य समाज, मॉडल, टाऊन,
यमुनानगर, मो. 9416446305

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की
हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872



कामनाओं का अथाह सागर है 'मन'

- रश्मि अग्रवाल

मन क्या है? कामनाओं का अथाह सागर है, जिसमें सर्वथा इच्छाओं की, कामनाओं की और महत्वाकांक्षाओं की लहरें उठा करती हैं। एक लहर पूरी हुई कि दूसरी पैदा हो गई। एक लहर गिरी कि दूसरी लहर उठ आई। मन के सागर को खाली करना कठिन ही नहीं असम्भव है। 'गीता' में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि इंद्रियों में मन मैं ही हूँ। मन विलक्षण शक्ति पूंज है। शास्त्रकारों ने मन को मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण बताया है। मन अत्यन्त चंचल है इसलिए वश में करना अत्यन्त कठिन सा हो जाता है जबकि मनुष्य स्वेच्छाचारी है वो परम्पराओं, मर्यादाओं, वर्जनाओं और दायित्व बोध से बंधनों में बंधा हुआ है। जिसके अंतर्गत हम संसार के लौकिक सुखों की ओर भागते हैं। पर आचार्य चाणक्य के अनुसार मन को अपना मित्र बनाएँ। उसे निरन्तर विचार निमग्न रखें। एक विचार की अनय विचारों से तुलना करते रहें और आवश्यकता के आधार पर उसमें कांट-छांट करते रहें। जिस तरह मित्र को हमेशा नेक सलाह दी जाती है, उसी तरह अच्छे विचारों को प्राथमिकता दें।

व्यक्तित्व विकास हेतु आवश्यक है, मन की एकाग्रता की और एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यान, ध्यान से ही इंद्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त की जा सकती है।

हम जागरूक हैं और समझते भी हैं कि क्या सही है? हमारा कुछ करना, स्वयं को व दूसरों के जीवन को खुशियों से भर देगा लेकिन हम डर जाते हैं, मन की भी नहीं सुनते और झुंझलाते हैं, क्रोध करते हैं इसलिए तनाव ग्रस्त रहते हैं। जबकि संसार का जो विज्ञान है, वह केवल बाहरी खोज करता है। पृथ्वी से आसमान के सितारे कितनी दूर हैं, सूर्य कितना ठंडा हो रहा है, पृथ्वी से चांद, सूरज की दूरी कितनी है, हवाई जहाज की रफ्तार वायु से तेज गति से तेज कैसे हो? इन सभी को नापने और नई-नई खोज करने में लगा है पर यह सब बाहरी उड़ान है। कोई चीज कैसे बनी, सांसारिक वैज्ञानिक इसी की खोज में लगा रहता है। यदि आप किसी वैज्ञानिक को गुलाब का फूल भेंट करो तो वो उसकी सुन्दरता को तो निहारेंगे लेकिन इस खोज में लग जायेगा कि इसमें सुगंध किस कारण है? इसका रंग लाल, पीला कैसे और क्यों है? इसके साथ कांटे देखकर हमारा मन खराब हो जायेगा वहीं ऋषि-मुनि कहते हैं कि ये सब प्राकृतिक है, ये कांटे ही हमारा सुरक्षा कवच है, ये ही तो हमें अच्छाई-बुराई से लड़ना सिखाते हैं। ईश्वर ने हमारे मस्तिष्क और व्यक्तित्व में अपार क्षमता और योग्यता संग्रहित की है। इसलिए कोई भी कार्य हमारे लिए असम्भव नहीं पर इसके लिए मन का संतुलन आवश्यक है।

क्योंकि ये ही हमें स्पष्ट दृष्टिकोण देता है जिसमें हम

राग, द्वेष को छोड़कर जीवन को सकारात्मक रूप में देखने लगते हैं। परमात्मा प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं का जीवन संवार लेने का अवसर देता है। हमारा मन व कर्म ही वह शक्ति है जिसके माध्यम से हम अपना भाग्य लिख सकते हैं, इसके लिए जब तक आप मन से पूरी तरह आश्वस्त न हो जाएँ कि आपके द्वारा किया गया काम सही है, तब तक आपको संतुष्टि नहीं मिलेगी। सफल होना यानि नाम और पैसा होना, इनका मिलना यानि खुशियों से मिलना और प्रत्येक समस्या का हल जरूरी तो नहीं। पर अमेरिकी अभिनेता व हास्य कलाकार जिम कैरी ऐसा नहीं मानते वे कहते हैं, हर किसी को अमीर और लोकप्रिय होना चाहिए। हर वह चीज या कार्य करना चाहिए, जिसकी चाहत है, तब ही वे जान पायेंगे कि यह समाधान नहीं है। जैसे ओशो ने भी कहा है कि हम जो भी करते हैं, वह मन का पोषण है, मन को हम बढ़ाते हैं, मजबूत करते हैं। हमारे अनुभव, हमारा ज्ञान, हमारा संग्रह, सब हमारे मन को मजबूत और शक्तिशाली करने के लिए है इसलिए ज्ञान और लम्बे अनुभवों का खजाना जितना अधिक बढ़ाएंगे, मन के लिए उतना ही अच्छा है।

अब हम कहेंगे कि मन तो मानता ही नहीं, इसे कैसे मनाएँ, कैसे समझाएँ? इसका भी सरल उपाय है कि मन में जब कभी नकारात्मक विचार आएँ तो उसको रोको, गलत विचार आएँ क्यों आया इसका कारण खोजो फिर धीरे-धीरे एक ऐसी स्थिति आएगी कि आपके मन में गलत विचार आएंगे ही नहीं। मन के पवित्र होने के साथ शरीर भी पवित्र हो, आपका व्यक्तित्व ऐसा हो कि आपको देखकर किसी दूसरे के मन में कुप्रभाव प्रकट न हो। सदा पवित्रता का ही प्रमाण है कि जब हम किसी साधु, संत अथवा किसी महापुरुष के पास जाते हैं और उस वातावरण की परीधि में रहते हैं, तो उसका कुछ ना कुछ प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता ही है इसलिए व्यक्ति को स्वयं के भीतर खोज करनी चाहिए। अपने मन व वाणी में सरलता, शुद्धता लानी चाहिए। कभी भी किसी भी कार्य को करने में अवरोध सामने हो लेकिन यदि वह आपका सहज, स्वभाविक कर्म है, अर्थात् उस काम में आपका मन रमता हो तो उसे दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ पूर्ण करें।

तात्पर्य यही कि हमें मन का दास न होकर उसको अपने वश में करना चाहिए, मन की उड़ान को स्थिर करते हुए, स्वयं के अच्छे-बुरे, लाभ-हानि, पथ-कुपथ एवं सत्य-असत्य पर चिन्तन-मनन करते हुए, जीवन की रूप रेखा बनानी चाहिए ताकि मन को भटकने का अवसर ही न मिले तबही हमारा मन सुविचारों से भरा सर्वथा हमारे साथ होगा।

-साभार हिन्दु सभा वार्ता से

गृहस्थ में रहते हुए ही त्रि-एषणाओं से छूटने का अभ्यास करें (अवश्यमेव जीवन सफल हो जायेगा)

-आचार्य रामसुफल शास्त्री (हाँसी)

परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान के माध्यम से संसार की समस्त योनियों में सर्वश्रेष्ठतमम् योनि मनुष्य जाति के जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त वैदिक नियमानुसार चलकर मुक्ति अर्थात् जन्म मरण के चक्र से छूटकर प्रत्येक मनुष्य को अपना-अपना जीवन सफल करने का दुर्लभ सुअवसर प्राप्त हुआ है। प्रत्येक मनुष्य को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि मानव जीवन अर्थात् मनुष्य का जन्म विशेष पुण्य कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है, इसे एक क्षण भी व्यर्थ न गंवाये। विद्यार्थी जीवन, गृहस्थ जीवन, वानप्रस्थ जीवन और संन्यास ये चार विभाग विद्या प्राप्ति से लेकर मोक्ष तक पहुँचने के लिए अति उत्तम मार्ग हैं अथवा व्यक्ति का विशेष पुण्य प्रताप प्रबल हो तो सीधे संन्यास धारण कर मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हो सकता है। कोई भी मनुष्य ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ के द्वारा सीढ़ी दर सीढ़ी संन्यासी बनकर मोक्ष की प्राप्ति करना चाहे तो विद्यार्थी जीवन में खूब परिश्रम से विद्या प्राप्त करे और फिर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके धर्मपूर्वक अत्यन्त श्रम करते हुए धन अर्जित करके परिवार का सुख पूर्वक पालन-पोषण करे।

गृहस्थ सभी आश्रमों में से सबसे अधिक जिम्मेदारियों का आश्रम है। गृहस्थी बनने के बाद ही व्यक्ति पत्नी-पुत्र आदि सम्बन्धियों एवं धन सम्पदा आदि के माया-मोह रूपी जाल में अधिक फँसता जाता है, इसलिए पारिवारिक जिम्मेदारियों घर-गृहस्थी के कर्तव्य-कर्मों को निभाते हुए प्रत्येक गृहस्थी को तीन एषणाओं से छूटने का अभ्यास व प्रयास गृहस्थ में रहते हुए ही निरन्तर करते रहना चाहिए।

पुत्रैषणा-वित्तैषणा एवं लोकैषणा को भली भाँति समझकर पत्नी-पुत्र-पुत्री आदि के प्रति अपना पूर्ण कर्तव्य निभाते हुए सम्बन्धियों से कोई इच्छा उम्मीद न रखें, अपना फर्ज अदा करके भूल जायें, पुत्रों का क्या कर्तव्य है, वे स्वयं जानें। पुत्र-पुत्रियों की क्या जिम्मेदारी है? क्या ड्यूटी है? उन्हें स्वयं ही समझना चाहिए। पुत्रैषणा में अधिक न फँसे, अधिक माया-मोह दुःखदायी है।

वित्तैषणा:-धर्मपूर्वक अपने परिश्रम से कमाये

हुए, धन से उदरपूर्ति, परिवार पालन-पोषण, समाज सेवा के कार्य आदि के लिए उत्तम ढंग से कमाये हुए धन को उत्तम तरीके से खर्च करना चाहिए, लोभ लालच के वशीभूत अधर्म व पाप से धनार्जन बिल्कुल भी न करें। अपने परिवार का हिसाब पूर्णतया ठीक रखें। किसी कवि ने बहुत ही सुन्दर लिखा है कि:-

धन खूब कमा सुख चैन मना,
पर ऐसा कोई अपराध न करा।
अपना घर-बार बसाने को,
औरों का घर बर्बाद न करा॥

धन की पवित्रता का पूरा-पूरा ध्यान रखें और धीरे-धीरे धन की इच्छा को कम करते हुए वित्तैषणा से छूटने का कठिनतम अभ्यास नित्यप्रति करें।

लोकैषणा: अत्यधिक मान-सम्मान की इच्छा रखना लोकैषणा कहलाती है। इसलिए लोगों के बीच-समाज में बहुत मान-सम्मान की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। मान-अपमान में सम-बराबर रहें। यदि कोई श्रद्धापूर्वक आदर सम्मान दे तो उसे विनम्रतापूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए, किन्तु अपने मन में सम्मान की इच्छा कदापि न रखें। अधिक सम्मान मिलने पर उतावले न हों और अपमान जनक स्थिति में विचलित न हों, मान-अपमान में एक समान रहें। यही लोकैषणा से बचने का सरल उपाय है।

इस प्रकार से प्रत्येक गृहस्थी:- अपने घर-गृहस्थ के कार्यों को करते हुए, अपनी जिम्मेदारी को निभाते हुए तीनों एषणाओं से धीरे-धीरे छूटने का अभ्यास करे, ताकि गृहस्थ में रहते हुए वानप्रस्थ की तैयारी हो जाये और वानप्रस्थ लेकर तप-स्वाध्याय करते हुए संन्यास की ओर अग्रसर हो। जब अपने पुत्र व दूसरे के पुत्र में एकीभाव नजर आने लगे अर्थात् अपने-परायें का भेद समाप्त हो जाये तब संन्यास धारण करें। अवश्यमेव मानव जीवन सफल हो जायेगा।

- पुरोहित आर्य समाज सैक्टर 7बी, चण्डीगढ़
मो. 9416034759, 9466472375



गरम पानी अनेक रोगों में दवा है

- अभय कुमार जैन

प्राकृतिक चिकित्सा में अनेक प्रकार से पानी द्वारा उपचार किये जाते हैं। स्वच्छ, शुद्ध, हल्का, छाना हुआ अथवा उबला हुआ पानी स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होता है। आयुर्वेद के अनुसार जब उबलते हुए पानी में झाग आने बंद हो जाए और पानी आधा बचे तथा निर्मल हो जाए इसे 'उष्णोदक' संज्ञा दी जाती है।

उष्णोदक का सेवन करने से होने वाले अनेकानेक लाभ हैं:

- आजकल एड़ी दर्द कई रोगों में पाया जाने लगा है या यूँ कहा जाए कि एड़ी दर्द की आम लोगों में शिकायत है इसके लिए एक टब में गरम पानी ले उसमें टिंचर की कुछ बूंदें डालें व अपने पैर 15-20 मिनट डुबो कर रखें कुछ ही दिनों के प्रयोग से आराम मिल जाएगा।
- वर्तमान समय में पेट के रोगी की समस्या काफी बढ़ गई है अधिकांश पेट की बीमारियाँ दूषित जल से होती हैं यदि पानी को गर्म कर फिर ठंडा कर पीया जाए जो पेट की कई अधिकांश बीमारियाँ पनपने ही नहीं पाएगी।
- खाली पेट गरम पानी पीने से मूत्र अवरोध दूर हो जाते हैं हृदय की जलन भी कम हो जाती है। वायु रोगों में गरम पानी अमृत समान फायदेमन्द है।
- खांसी, जुकाम, दमा, कब्ज, संग्रहणी, हिचकी, खराश आदि रोगों में और तले भुने पदार्थों के सेवन के पश्चात् गरम पानी पीना हितकर है।
- एक गिलास गर्म पानी करे उसमें एक नींबू का रस डालें तथा काली मिर्च व नमक डालकर पीये बड़ा स्वादिष्ट पेय है-इससे पेट का भारीपन दूर हो जाएगा।
- थकान होने पर एक टब में गर्म पानी ले उसमें नमक डालकर पैरों को 25-30 मिनट डुबोए रखें, थकान से राहत मिलेगी।
- जाड़े के दिनों में टब में गर्म पानी ले उसमें थोड़ा सर्फ डालकर पैरों को डुबोए व पुराने मौजे से

पैरों की एड़ियाँ रगड़े उंगलियों को साफ करें साफ पानी से धोकर पैरों को पोछकर ग्लिसरीन लगाकर मौजें पहनकर रहे पैर मैल रहित होकर मुलायम हो जाएंगे।

- एक गिलास गर्म पानी में नमक डालकर गरारे करें। सम्पूर्ण गले की खराश दूर हो जाएगी। इस प्रकार का पानी पीने से खांसी का प्रभाव भी कम हो जाता है। गर्म जल सूखी खांसी की प्रभावशील औषधी है। एक गिलास पीने से कफ पतला हो जाता है और अंत में खांसी का वेग बहुत कम हो जाता है।
- मोटापा कम करने के लिए भोजन के बाद गुनगुना पानी घूट-घूट कर पीये।
- खाना खाने के बाद हाथ धोने के लिए प्रायः होटलों में गर्म पानी व नींबू दिया जाता है गरम पानी से हाथ धोने से हाथों की चिकनाई समाप्त हो जाती है।
- छोटी-मोटी चोट लगने पर एक मग गरम पानी ले उसमें डेटोल की कुछ बूंदें डालकर चोट वाले स्थान को धोकर मल्हम लगाये (सोफरामाईसिन, बेटारिन, न्यूस्पोदन) चिकित्सक के परामर्श अनुसार लगाये शीघ्र ही आराम हो जावेगा।
- कई लोगों के हड्डियाँ बढ़ने की शिकायत हो जाती है उन्हें चाहिए कि दो टब लें एक में गरम पानी एक में ठंडा उसमें बारी-बारी से कभी गरम पानी कभी ठंडे पानी में पैरों को डूबो कर रखें। (चिकित्सक से परामर्श के बाद) आराम मिलता है।

□ आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है। - विक्रम देव आर्य

हीरा और जौहरी

- अशोक सिसौदिया

कबिरा आप ठगाईए और न ठगिए कोय,
आप ठगे सुख अपने और ठगे दुःख होय।

कुशीनगर का एक जौहरी, एक गाँव से गुजर रहा था,
और इक बच्चे उसी राह पर, कंचा-गोली खेल रहा था।
तभी जौहरी की दृष्टि इक, कंचे-गोली पर अटकी,
लगा देखने उस गोली को, बात बहुत मन में खटकी।

यद्यपि वो सारे ही कंचे, मिट्टी से थे अटे पड़े,
फिर भी छुप न पाया हीरा, थे वो पारखी बहुत बड़े,
धीरे-धीरे चल बच्चे के, पास वो आकर हुए खड़े,
और प्यार से लगे वो कहने, तेरे कंचे झड़ पड़े।

जगह-जगह से टूट गए हैं, सभी हो चुके बहुत पुराने,
सुन्दर-सुन्दर कंचे दूँगा, यदि बात तू मेरी माने।
रंग-बिरंगे कंचों के संग, पाँच रूपय भी तुझे मैं दूँगा,
किन्तु तेरे गन्दे कंचे, बदले में मैं तुझसे लूँगा।

बड़ी खुशी से उस बच्चे ने, सब कंचे उसको दे डाले,
हाथ पसारे जौहरी आगे, जिससे वो भी सब कुछ पाले।
पाकर पाँच रूपये और कंचे, बच्चा घर की ओर चला,
वो क्या जाने एक छल ने, अपने छल से उसे छला।

उधर जौहरी मन में हँसला, अपने घर वापिस आया,
पोछा और तराश हीरा, जिससे रूप निखर आया।
सजा-धजा कर उस हीरे को, मंजूषा में रक्ख जाकर,
उसे बेचने की युक्ति फिर, रच डाली बैठक में आकर।

कुशी नगर के सर्राफे में, एक मुनादी करवा डाली,
अद्भुत हीरा बिकने आया, मूल्य एक लाख है खाली।
दूर देश का इक व्यापारी, कुशीनगर में तभी था आया,
उस हीरे की चर्चा सुनकर, मन ही मन में वो हरषाया।

मिला पहुँच कर वो व्यापारी, उस हीरा व्यापारी से,
बोला मैं क्रेता हीरों का, आया हूँ तैयारी से।
कृपया हीरा मुझे दिखा दो, यदि पसन्द मुझे आया,
इसी समय मैं क्रय कर लूँगा, पैसा लेना मन भाया।

उसे दिखाने को वह हीरा, जब मंजूषा को खोला,
हीरा चूर-चूर था उसमें, तब वो हीरे से बोला।
मिट्टी-कीचड़ में सना ठोकरें, गली-गली में खाता था,
नहीं कोई कीमत थी तेरी, केवल चोटें पाता था।

मैं तुझको ले करके आया, सजा-धजा कर चमकाया,
तेरी कीमत को लाखों तक, मैंने ही है पहुँचाया।
हीरा बोला नहीं जानता, था वो बच्चा मेरा मूल्य,
इसलिए शारीरिक कष्टों, को भी मैं जाता था भूल।

तुझे पता थी तेरी कीमत, पर पाँच रूपए में ठग लाया,
हृदय हुआ है चूर-चूर, मेरा दिल यह सह न पाया।
जार-जार रोता पछताता, सिर धुनता था व्यापारी
उसके लालच और धोखे से, मिली उसे सजा भारी।

यद्यपि ठगा गया वह बालक, किन्तु फिर भी था खुशहाल,
ठगने वाला वो व्यापारी, चैन न पाता था बेहाल।
भूले से भी छल न करना, प्यारे बच्चों किसी से तुम,
मन अशान्त कभी न होगा, न ही दुःख पाओगे तुम।

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- नरेश-मेरा विदेशों से बहुत पुराना रिश्ता है।
सुरेश-कैसे
नरेश-बचपन में जब मां डाट देती थी तो मैं
'रूस' जाया करता था।
- अध्यापक-सीनियर और जूनियर में अंतर बताइए।
नरेश-सर जो समुद्र के पास रहता हो, वो
सीनियर (Sec-Near) और जो चिड़ियाघर के
पास रहता है वो (Zoo-Near)
- टीचर-तुम पढ़ने में ध्यान क्यों नहीं देते?
पप्पु-पढ़ाई सिर्फ दो वजह से की जाती है।
पहला कारण है डर और दुसरा कारण शौक।
बिना वजह के शौक हम पालते नहीं और डरते
तो हम किसी के बाप से भी नहीं।
- मैडम-जो बेवकुफ हो वो खड़ा हो जाये।
सुरेश-खड़ा हो गया।
मैडम-तुम बेवकुफ हो।
सुरेश-नहीं मैडम आप अकेली खड़ी थी मुझे
अच्छा नहीं लगा।
- हरीश-किसी चीज का लम्बा सा नाम बताओ।
सुरज-रबड़।
हरीश-यह तो बहुत छोटा है।
सुरज-लेकिन इसे खींचकर जितना चाहो उतना
लंबा कर लो।

बढ़ता विज्ञान, बढ़ता अन्धविश्वास (कारण और निवारण)

- ओम प्रकाश आर्य

जल, थल, नभ पर विजय प्राप्त कर मानव आज अंतरिक्ष में पिकनिक मनाने की योजना बना रहा है। वह दिन दूर नहीं जब वह चन्द्रमा पर जाकर पृथिवी का अनुपम नजारा देखकर सुख की अनुभूति करेगा। मंगल ग्रह पर जाकर वहाँ के वातावरण का अध्ययन करेगा। वहाँ की बेशकीमती धातुओं को पृथिवी पर लाकर लाभकारी व्यापार करेगा। इसमें कोई शक नहीं कि मानव ने आशातीत वैज्ञानिक प्रगति की है। हो सकता है कि वह अन्य ग्रहों पर भी मानव-बस्तियाँ बसा दे। अपने सौरमंडल से इतर ग्रहों का पता लगा ले और अन्तरिक्ष में अपना एक साम्राज्य स्थापित कर ले। इतनी वैज्ञानिक प्रगति के पश्चात् भी अन्धविश्वासों में कमी नहीं आ रही है। नित नए-नए तन्त्र-मन्त्र करने वाले ठग प्रकटीभूत हो रहे हैं।

अन्धविश्वास के चलते ही कहीं महिला को डायन बताकर उसे पीटा जाता है, कहीं रोग दूर करने के नाम पर रोगी के शरीर को तप्त धातु से दागा जाता है, जिससे उसकी हालत और बिगड़ जाती है। कहीं गड़ा धन प्राप्त करने के नाम पर टोटके किए जाते हैं। कहीं पर भगवान को प्रसन्न करने के लिए जीव हत्या कर दी जाती है। कहीं देवी-देवता को खुश करने के नाम पर ध्वनि-प्रदूषण उत्पन्न किया जाता है। प्रकृति के विरुद्ध कार्य किए जाते हैं। शादी-विवाह में तो बिना कुंडली मिलान किए, बिना मुहूर्त निकलवाए एक कदम भी आगे नहीं जाते। शनि की पूजा के नाम पर न जाने कितने लीटर तेल वैसे ही नष्ट कर दिए जाते हैं। कार्य के शुभारम्भ के नाम पर अंगरबत्तियाँ जलाकर विषैले तत्वों की वृद्धि करते हैं। भगवान व देवी-देवता की मूर्तियाँ बनाकर उन्हें जल में प्रवाहित किया जाता है। व्यक्ति की मृत्यु के उपरान्त न जाने कितने शवों को जल में इसलिए प्रवाहित करते हैं कि उसे मोक्ष मिल जाए। मोक्षप्राप्ति के नाम पर भी न जाने कितनी घटनाएँ घट जाती हैं। सुनने में यह भी आता है कि अमुक मंदिर के भगवान बीमार पड़ गए हैं, उनका इलाज चल रहा है। अमुक भगवान अभी

नाराज हैं। अमुक देवी को इतना चढ़ावा चाहिए। ज्योतिष के नाम पर तो इतना अन्धविश्वास फैला हुआ है जिसकी कल्पना नहीं कर सकते। राशि, ग्रहशांति, शुभाशुभ मुहूर्त आदि का तो कहना ही क्या। इनके चक्कर में मनुष्य अनेक शारीरिक-मानसिक कष्ट भोगता है। चमत्कारों की तो दुनिया ही निराली है। एक से एक चमत्कार दिखाने वाले ढोंगी मिल जाएँगे, जिनके चक्कर में पढ़े-लिखे सभ्य कहलाने वाले लोग आ जाते हैं।

कारण:- अन्धविश्वास का सबसे बड़ा कारण है अज्ञान। अज्ञानता में मनुष्य सत्यासत्य का निर्णय नहीं ले पाता और वह बिना सोचे-समझे अकृत्य करता चला जाता है। सत्यज्ञान की प्राप्ति वैदिक मार्ग के अलावा और कहीं नहीं हो सकती। चूँकि आज अधिसंख्य लोग वैदिक ज्ञान से विमुख हो गए हैं, इसलिए वे असत्य-मार्ग पर चलकर अन्धविश्वासों के शिकार हो रहे हैं। नवरात्रों के अवसर पर भक्तगण अन्धश्रद्धा के वशीभूत होकर सत्य से कोशों दूर चले जाते हैं। सारा जीवन अन्धविश्वास में समाप्त हो जाता है। जब तक वैदिक ज्ञान नहीं होगा तब तक मानव अन्धविश्वास से नहीं छूट सकता। वैदिक ज्ञान तर्क और विज्ञानसम्मत है, इसलिए वेद की शरण में ही मानव का कल्याण हो सकता है। अज्ञान विवेक का हरण कर लेता है, जिससे उसकी तार्किक क्षमता नष्ट हो जाती है। वह कुछ भी मानने और करने के लिए तैयार हो जाता है। एक मन्दिर पर तो करोड़ों का चढ़ावा आने की बात सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। यह क्या है? अज्ञानता ही तो है। विवेक को ताक पर रखकर मनुष्य धर्म और भगवान के नाम पर अन्धविश्वास के चंगुल में फँसकर सत्यता से परे हो जाता है।

अन्धविश्वास का दूसरा कारण है सस्ती मुक्ति। मुक्ति चाहे रोग से छूटने की हो, चाहे कष्ट से दूर होने की, चाहे जन्म-मरण से छूटने की हो, चाहे अभाव दूर करने की हो, चाहे शान्ति और आनन्द प्राप्त करने की हो, चाहे तनाव दूर करने की हो।

मुक्ति का हर सस्ता मार्ग अन्धविश्वास ही कहलाएगा, क्योंकि मुक्ति सस्ती नहीं होती, कठिन होती है। मुक्ति का मार्ग तप का मार्ग होता है। वह बहुत कठिन होता है। हवन-यज्ञ के स्थान पर एक अगरबत्ती जलाकर सस्ता रास्ता निकाल लेना, योगमार्ग पर चलने के बजाय मूर्ति पर माथा टेककर सस्ती मुक्ति की चाहत, वेद-शास्त्रों के स्वाध्याय के स्थान पर लच्छेदार किस्से-कहानियाँ सुनकर सस्ती मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा रखना, बिना परिश्रम किए प्रभूत धन प्राप्त करने के लिए तन्त्र-मन्त्र का सहारा लेना, कठिन ध्यान के स्थान पर स्थूल मूर्ति पर चढ़ावा-बजावा करके सहज ही भगवान का दर्शन करने की इच्छा रखना सब सस्ता और सरल मार्ग का अनुगमन अन्धविश्वास के ही अन्तर्गत आएगा। जन-जन तक वेदज्ञान का प्रचार न होना अन्धविश्वास फैलने का कारण है। लोगों को जो ज्ञान प्राप्त होगा उसे ही तो ग्रहण करेंगे। वेदज्ञान का प्रकाश जहाँ नहीं होगा, वहाँ अन्धविश्वास पनपेगा। इस विज्ञान के युग में यही हो रहा है। वेदज्ञान के प्रकाश के अभाव में नाना अंधविश्वासों के दौर चल रहे हैं जो मानव को नाना प्रकार के कष्ट भोगने को विवश कर रहे हैं। वेदज्ञान का अभाव अन्धविश्वास का जमाव।

निवारण-अन्धविश्वास से बचने का उपाय केवल और केवल वेदज्ञान है। वैदिक मार्ग ही मनुष्य को सत्यमार्ग बतलाता है क्योंकि वह विज्ञानसम्मत है। वेद की विचारधारा पूर्णतः वैज्ञानिक है। चूँकि विज्ञान अन्धविश्वास से परे होता है इसलिए वेद की शरण में आकर अन्धविश्वास से बचा जा सकता है। आत्मा-परमात्मा का ज्ञान, धर्म का ज्ञान, मोक्ष का उपाय, यज्ञ का ज्ञान, जीवन से सम्बन्धित ज्ञान सब वेद से प्राप्त किया जा सकता है। परा और अपरा विद्या का सारा ज्ञान वहीं से प्राप्त होगा। उसमें लेशमात्र भी अन्धविश्वास नहीं है। सत्यमार्ग का दरवाजा वेद खोलता है। यदि मानव अन्धविश्वास से दूर होना चाहता है तो उसे वेद की शरण में आना पड़ेगा। इसके अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं है। इसके लिए आर्य समाज को कमर कसकर तैयार होने की आवश्यकता है। आर्य समाज के अलावा अन्य किसी भी संस्था से

ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती और न ही उनके पास ऐसा वैज्ञानिक सत्यज्ञान है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादशसमुल्लास में बल देते हुए लिखा, “जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जन मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्य समाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।”

अतः इस वैज्ञानिक युग में पनपते अन्धविश्वास को दूर करने के लिए हमें वैज्ञानिक आधार लेकर प्रबुद्ध जनों के बीच जाकर अपनी बात समझानी पड़ेगी। बिना विज्ञान का सहारा लिए युवावर्ग वेद की बात को मानने को तैयार नहीं होगा। कारण वेदज्ञान से दूरी और निवारण विज्ञान का आधार लेकर अन्धविश्वासों को मिटाना। यह शत-प्रतिशत सत्य है कि आर्य समाज का सारा ज्ञान विज्ञानसम्मत है। यहाँ तक कि आत्मा और परमात्मा की गूढ़ बातें भी पूर्णतः वैज्ञानिक हैं। आवश्यकता है उन्हें सरल शब्दों में जनसामान्य तक पहुँचाने की। तभी अन्धविश्वास मिट सकेगा।

आर्य समाज रावतभाटा, वाया कोटा
(राजस्थान)-323307

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम “दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर”। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री विक्रमसिंह जी ठाकुर, दिल्ली
2. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
3. चौ नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि
4. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
5. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
6. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि
7. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
8. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
9. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
10. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
11. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्य गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री सैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईशान इंस्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र.
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आज्ञादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र.
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुडगांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुडगांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुडगांव, हरियाणा
58. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार, दिल्ली
59. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
60. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा गुडगांव, (हरियाणा)
61. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
62. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीकर कॉलोनी बहादुरगढ़
63. द शिव टर्बो ट्रक यूनिन, बादली रोड, बहादुरगढ़
64. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
65. सुपरिटेन्डेंट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
66. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ़
67. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुडगांव
68. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम्ब, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुडगांव
69. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
70. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
71. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
73. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्ढा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
74. श्रीमती रीटा चड्ढा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
75. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
76. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा
77. श्री मुकेश कुमार जी सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी हरेबली, दि.

हरफूल कैसे महात्मा एवं भक्त फूलसिंह बन गया

- कन्हैया लाल आर्य

महापुरुषों की जीवनियाँ वे प्रकाश स्तम्भ हैं, जो अविद्या, अन्धकार और पतन के गहरे गढ़ों में पड़े हुए मनुष्यों को दिव्य प्रकाश प्रदान कर उन्हें आगे बढ़ने और उन्नति करने का सन्देश देती हैं। जब हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्री कृष्ण, महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुषों के जीवन को पढ़ते हैं और उनका अनुकरण करते हुए उन जैसा बनने का प्रयत्न करते हैं तो हम समझते हैं कि उन महापुरुषों का जीवन इतना दिव्य है जिन्होंने जीवन से मृत्यु पर्यन्त कोई बुरा कार्य नहीं किया परन्तु जब हम स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा भक्तफूल सिंह जी के जीवन पर विचार करते हैं तो हमारे जीवन में आशा का संचार हिलोरे लेने लगता है। हम विचारते हैं कि जब एक नास्तिक, शराबी, जुआरी और अनेक व्यसनों में पड़ा हुआ व्यक्ति सारे दुर्व्यसनों को छोड़ कर स्वामी श्रद्धानन्द बन सकता है, कुसंग में पड़ा हुआ, रिश्वतखोर पटवारी भक्त फूल सिंह बन सकता है तो हम क्यों नहीं बन सकते।

आदि काल से ही भारत में जब-जब राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में हास हुआ और सुधार या क्रान्ति की आवश्यकता हुई-तब इस धरा पर किसी न किसी महान् आत्मा ने आकार समाज को नई दिशा दी। महर्षि दयानन्द का जन्म ऐसे समय में हुआ जब चहुँ ओर अज्ञान व अविद्या का साम्राज्य था, भारतीय समाज तरह-तरह की कुरीतियों एवं मिथ्या अन्ध विश्वासों से आबद्ध था। महर्षि दयानन्द ने आकर समाज और देश के सर्वतोमुखी विकास का सतत प्रयत्न किया। भारतवासियों को स्वराज्य एवं संस्कृति, स्वभाषा एवं स्वाधीनता का मूल मन्त्र दिया। महर्षि के महाप्रयाण के पश्चात् जिन महापुरुषों द्वारा आरम्भ किये गये कार्यों को आगे बढ़ाने का सतत प्रयास किया। उनके द्वारा प्रज्वलित सत्य की ज्योति को संसार में फैलाने का यत्न किया उन्होंने में से एक अन्यतम हरपाणा प्रान्त के ख्यातनामा स्वनाम धन्य महात्मा फूलसिंह जी भी हैं।

भक्त फूलसिंह का जन्म 24 फरवरी 1885 को हरियाणा प्रान्त के अर्न्तगत वर्तमान में सोनीपत जिले के माहरा (जूआ) ग्राम में चौधरी बाबर सिंह के घर

माता तारावती की कोख में जन्म हुआ। तत्कालीन रीति रिवाज के अनुसार नाम करण संस्कार करवा कर बालक का नाम हरफूल रखा गया। इनमें बाल्यकाल से ही सेवा-भाव निर्भयता, सरलता, मधुरभाषिता, सदाचार, सुशीलता आदि गुण विद्यमान थे।



कन्हैया लाल आर्य

हरफूल कैसे फूलसिंह बन गया? जब वे खरखोदा के स्कूल में विद्या-अध्ययन कर रहे थे तभी विद्यालय में कुएँ में वर्षा ऋतु में वर्षा की अधिकता के कारण जलस्तर ऊपर आ गया। छात्रों ने देखा कि विषैला सर्प भी इस जल स्तर पर आ गया है। सभी छात्र भयभीत हो गये। परन्तु हरफूल ने वहाँ साहस दिखाया और गुरु जी से कहा, “गुरु जी! एक मोटी रस्सी से टोकरी को बन्धवा कर कुएँ में लटकवा दें और मुझे एक मजबूत डण्डा दे दें, मैं साँप को मारकर बाहर निकाल दूँगा” टोकरी में बैठकर हरफूल नीचे उतर गया और अपने साहस से साँप को मार डाला। उसकी इस निर्भयता को देखकर सभी अध्यापक एवं छात्र दंग रह गये। मुख्य अध्यापक ने उसको आशीर्वाद देते हुए कहा, “बेटा हरफूल! तू वास्तव में वीर है, साहसी है। इस साहस के पश्चात् हरफूल को फूलसिंह नाम से पुकारा जाना लगा।

फूलसिंह पटवारी बन गया-विद्यालय में मिडिल कक्षा उत्तीर्ण कर पटवारी की परीक्षा उत्तीर्ण की। बहुत अच्छे अंक लेकर अब बालक फूलसिंह न रहकर फूलसिंह पटवारी कहे जाने लगे।

कुसंग में पड़ना- कहते हैं “यौवन का काल हो, धन की कमी न हो, चारों ओर सम्मान ही सम्मान मिले, व्यक्ति कुसंग में पड़े बिना रह नहीं सकेगा। निरन्तर कुसंग के कारण अनेक दुर्व्यसन आ गये। वे मद्य मांस सेवन करने लगे और रिश्वत भी लेने लगे।

आर्य समाज में प्रवेश: चौधरी प्रीत सिंह पटवारी (इसराना निवासी) के सत्संग से इनकी वैदिक कार्य व ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई और वे सन् 1908 में पानीपत के आर्य समाज में नियमपूर्वक

यज्ञोपवीत धारण करके दृढ़ आर्य समाजी बन गये। आर्य समाज की सदस्त्यता ग्रहण करने के पश्चात् आपके मन में वैदिक धर्म के प्रसार की लगन विशेष रूप से प्रज्ज्वलित हो गई। वे पटवारी के अतिरिक्त समय को आर्य समाज के प्रचार में लगाते थे। व्याख्यान एवं भजनों द्वारा लोगों में प्रचार करते, करवाते रहते थे। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों व जीवनी का नियमपूर्वक स्वाध्याय करते थे, नित्य नियम से सन्ध्या, यज्ञ भी किया करते थे।

गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुए। वहाँ पर महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जी का मधुर उपदेश चल रहा था। महात्मा जी कह रहे थे, “मानव जीवन दुर्लभ है। जो व्यक्ति इस जीवन को विलास व प्रदर्शन में नष्ट कर देता है, उसे बाद में पछताना पड़ता है। हमें सदैव कुकर्म से दूर रहना होगा, भटके हुए लोगों को मार्ग में लाना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है” इस उपदेश से उनके जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन आ गया और उन्होंने निश्चय किया कि आज के पश्चात् पटवार के अतिरिक्त समय को आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में लगाऊँगा। गुरुकुल के उत्सव के पश्चात् आप आर्य समाज के दीवाने हो गये।

गुरुकुलों की स्थापना—वैदिक धर्म के प्रचारार्थ उन्होंने विचार किया कि जिस प्रकार बौद्ध भिक्षुओं ने बौद्धमत को समस्त संसार में फैला दिया उसी प्रकार आर्य मिशनरी खड़े किये जायें तो सारे संसार में वैदिक धर्म और ऋषि दयानन्द की विचारधारा को बढ़ावा दिया जा सकेगा। उन्होंने अपना यह विचार पण्डित ब्रह्मानन्द जी (बाद में स्वामी ब्रह्मानन्द) महापदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सम्मुख प्रकट किया। उन्होंने इनको गुरुकुल खोलने की प्रेरणा दी। उपयुक्त वातावरण बनाकर ग्राम भैसवाल कलां में 1920 में बालकों के गुरुकुल की स्थापना की, तत्पश्चात् कन्याओं के लिए गुरुकुल खानपुर कलां की स्थापना की जो आज तक यथाशक्ति आर्य समाज व वैदिक धर्म की सेवा कर रहा है।

शुद्धि का कार्य—स्वामी श्रद्धानन्द जी की आज्ञानुसार आपने मुसलमानों राजों व मलकाने राजपूतों की शुद्धि के लिए आपने कठोर परिश्रम किया। इस कार्य में उन्हें कई स्थानों पर उपवास भी करना पड़ा।

कई स्थानों पर मुसलमानों द्वारा अपहरण की गई हिन्दू महिलाओं को मुक्त कराया। इन कारणों से क्षेत्र के सब मुसलमान आप के शत्रु हो गये। लोहारू रियासत का नवाब वैदिक धर्म के प्रचार में बाधा डालता रहता था। आप ने पंजाब के उच्च अधिकारियों से मिलकर उन बाधाओं को तो दूर करा लिया परन्तु स्वयं नवाब की गुण्डाशाही के शिकार भी हुए और मृत्यु के मुख से बाल-बाल बचे।

हैदराबाद का सत्याग्रह—हैदराबाद रियासत के आर्य सत्याग्रह में हरियाणा प्रान्त ने जो भाग लिया वह सब प्रान्तों से बढ़कर था उसका विशेष श्रेय श्री पूज्य भक्तफूल सिंह जी को जाता है। इसीलिए सत्याग्रह की समाप्ति पर महाशय कृष्ण जी ने विनोद में कहा था, “जब भक्तफूल सिंह जैसे फरिश्ते आर्य समाज में विद्यमान हैं तो हमको जेल में कौन बंद रख सकता है?”

आर्य समाज का सत्संग, रिश्वत व दुर्व्यसनों का त्याग—जब से फूलसिंह आर्य समाज के सत्संग में आने लगे, उनके जीवन में परिवर्तन आने लगा। उन्होंने सभी दुर्व्यसनों को उन्होंने अपना उपनाम भी ‘फूल सिंह प्रायश्चित्ती’ रख लिया था। ली हुई रिश्वत का भी उन्हें पश्चाताप होता रहता था। अन्त में उन्होंने निश्चय किया—जब तक मैं ली हुई रिश्वत लोगों को वापिस न करूंगा तब तक मेरे मन को शान्ति नहीं मिलेगी” यह दृढ़ निश्चय करके अपनी पैतृक सम्पत्ति को 5000 रुपये में बेचा और सारी रिश्वत जितनी भी जिससे ली थी, वापिस कर दी। पूर्वकृत दुष्कर्मों के लिए प्रायश्चित्त किया। अब लोगों में वे ‘भक्त जी’ के नाम से प्रसिद्ध हो गये। प्रचार कार्य करने के लिए नौकरी छोड़ दी। हजारों को आर्य समाजी बनाया तथा मांस, शराब व जुआ छुड़वाया।

पटवारी रहते समय, उन्होंने एक बार अभिमानवश एक हरिजन भाई को जूतों से ठोकर मार दी थी। ज्यों विवेक जागा तो उस हरिजन भाई के घर पहुँचे और उसके पैर पकड़कर क्षमा याचना की।

बूचड़खाने को बन्द करवाया—एक बार की बात है कि ग्राम समालखा में सरकार ने बूचड़खाना खोलने की घोषणा की। भगत फूलसिंह जी के पास उस ग्राम के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति आये और कहने

लगे, “पटवारी जी, हमसे कुछ भी करवा लो परन्तु यहाँ बूचड़ खाना न खुलने दो।” वह अहिंसक उपायों के असफल हो जाने पर, सशस्त्र प्रयोग में भी विश्वास रखते थे। जब बूचड़खाने को बन्द करने के अहिंसक उपाय सफल नहीं हुए तो हजारों व्यक्तियों को सशस्त्र अपने साथ लेकर बूचड़खाने को घेर लिया। इस पर सरकार ने भयभीत होकर बूचड़खाने खोलने के आदेश वापिस ले लिए। इसी प्रकार लाहौर में 1937-38 में पचास लाख रुपये से पंजाब सरकार द्वारा खुलने वाले प्रसिद्ध बूचड़ खाने के बन्द करवाने में भक्त जी का पूरा हाथ था। यह भक्त जी की गोभक्ति, कार्यकुशलता व, परिश्रम का जीता जागता उदाहरण है।

सब के दुःख निवारण की धुन:- पूरे हरियाणा में जिस किसी दुःखिया को कही शरण नहीं मिलती थी वह अन्त में भक्त जी महाराज की शरण में आ जाता था। वे अपनी पूरी शक्ति लगाकर उनकी समस्या का समाधान करते थे। ऐसे ही दुःखी जनों में ग्राम मोठ (हिसार) के चमार बन्धुओं के पास कुआँ नहीं था। हरिजनों ने अपना पृथक कुआँ बनाने का प्रयत्न किया परन्तु मुसलमानों ने खुदे कुएँ को पुनः भर दिया। इस पर भक्त जी ने अनशन प्रारम्भ कर दिया परन्तु मुसलमानों का इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने घोषणा कर दी कि हरिजनों के कुएँ से निकले जल से आचमन करके ही अन्न ग्रहण करेंगे। महात्मा गाँधी तक सभी ने उनका अनशन समाप्त करने के लिए बहुत प्रयास किए। भक्त फूल सिंह जी ने उस कुएँ के जल से आचमन करके ही अपना अनशन तोड़ा। आपको कुएँ पर ले जाने के लिए रथ सजाया गया। आपके रथ के पीछे हजारों बार-नारियाँ जय घोष कर आनन्दित हो रहे थे। कुएँ पर पहुँच कर आपने एक हरिजन भाई से उस कुएँ का पानी खिंचवाया तथा जल का पान किया। जिस युवक ने आपको मोठ गाँव में अपमानित किया था उसी ने आपको संतरे का रस पिलाया था और आपका प्रारम्भ बन गया।

इस घटना के पश्चात् महात्मा गाँधी जी ने अपने पास बुलाया और वार्तालाप में अपना अनुयायी बनाने का प्रयत्न किया, परन्तु असफल रहे। महात्मा गाँधी

जी ने कहा था, “आप आर्य समाज के दायरे, से निकल कर मेरे अनुसार कार्य कीजिए। आप को मैं भरपूर सहयोग करूँगा” परन्तु आर्य समाज के इस दीवाने को गाँधी जी का कोई प्रलोभन झुका न पाया। भक्त जी ने कहा, “महात्मा जी, मैं आप की सब आज्ञायें, मानने को तैयार हूँ परन्तु मैं आर्य समाज को नहीं छोड़ सकता। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द मेरे रोम-रोम में समाया हुआ है।”

हरिजनों के लिए कुआँ बनने के उपरान्त महात्मा गाँधी जी ने 26.10.1940 को हरिजन सेवक नाम पत्रिका में जो शब्द लिखे। इससे गाँधी जी का भक्त फूल सिंह जी के प्रति बहुत ही आदर भाव झलकता है। पत्रिका के शब्द ये हैं:-

“मुझे श्री वियोगीहरि जी के पत्रों से भक्त फूल सिंह जी के पवित्र अनशन व्रत का समाचार मिला। भक्त जी के हृदय में हरिजनों के प्रति किये गये अन्याय का गहरा दुःख था। हरिजनों को पीने के पानी का बड़ा कष्ट था, इसे दूर करने के लिए उन्हें अनशन व्रत करना पड़ा। यह व्रत केवल धर्मबुद्धि से तथा ईश्वर विश्वास पर किया गया था। व्रत काल में अनेकों बार असफलता के बादल मण्डराये परन्तु भक्त जी का धैर्य और ईश्वर विश्वास प्रबल था। समय आया, वे अपने व्रत में सफल हुए। मेरे राजकोट के व्रत में विश्वास की कमी थी। प्रतिकूल स्थिति ने मेरे मन को हिला दिया, जिससे मैं व्रत में असफल रहा।”

बलिदान-14 अगस्त 1942 रात्रि के 9 बजे थे। भक्त जी कन्या गुरुकुल खानपुर में वट वृक्ष के नीचे ध्यान-मग्न बैठे थे। उस समय पाँच मुसलमानों सिपाही के वश में आ धमके। उन नराधमों ने दुष्टतापूर्ण व्यवहार करते हुए, “तुम अपने गुरुकुल में फौजी भगौड़ों को रखते हो, तुम सरकार से गद्दारी करते हो।” भक्त जी ने कहा, “यह छात्राओं का गुरुकुल है, फौजी भगौड़ों का आश्रम स्थल नहीं।” वे नराधम अपने साथ अपने साथ एक बन्दूक और दो पिस्तौल लाये थे। इन नराधमों ने भक्त जी को दाढ़ी से पहचान लिया था। ओशम की ध्वनि निकली और आप शहीद हो गये।

भक्त जी का तप, त्याग और बलिदान का जीवन देशवासियों को समाज सुधार, धर्म प्रचार और देश निर्माण के कार्यों में अग्रसर होने के लिए सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

शूरता की मिसाल पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर

(6 मार्च को पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस के अवसर)

-डॉ. विवेक आर्य

पंडित लेखराम इतिहास की उन महान हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिए। जीवन के अंतिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। आपके पूर्वज महाराजा रंजित सिंह की फौज में थे इसलिए वीरता आपको विरासत में मिली थी। बचपन से ही आप स्वाभिमानी और दृढ़ विचारों के थे। एक बार आपको पाठशाला में प्यास लगी। मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगी। मौलवी ने जूठे मटके से पानी पीने को कहा। आपने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत मांगी और न ही जूठा पानी पिया। सारा दिन प्यासा ही बिता दिया। पढ़ने का आपको बहुत शोक था। मुंशी कन्हयालाल अलाखधारी की पुस्तकों से आपको स्वामी दयानंद जी का पता चला। अब लेखराम जी ने ऋषि दयानंद के सभी ग्रंथों का स्वाध्याय आरंभ कर दिया। पेशावर से चलकर अजमेर स्वामी दयानंद के दर्शनों के लिए पंडित जी पहुँच गए। जयपुर में एक बंगाली सज्जन ने पंडित जी से एक प्रश्न किया था की आकाश भी व्यापक हैं और ब्रह्मा भी, दो व्यापक किस प्रकार एक साथ रह सकते हैं ? पंडित जी से उसका उत्तर नहीं बन पाया था। पंडित जी ने स्वामी दयानंद से वही प्रश्न पुछा। स्वामी जी ने एक पत्थर उठाकर कहा की इसमें अग्नि व्यापक हैं या नहीं? मैंने कहा की व्यापक हैं, फिर कहा की क्या मिट्टी व्यापक हैं? मैंने कहा की व्यापक हैं, फिर कहा की क्या जल व्यापक हैं? मैंने कहा की व्यापक हैं। फिर कहा की क्या आकाश और वायु? मैंने कहा की व्यापक हैं, फिर कहा की क्या परमात्मा व्यापक हैं? मैंने कहा की व्यापक हैं। फिर स्वामी जी बोले कहा की देखो। कितनी चीजें हैं परन्तु सभी इसमें व्यापक हैं। वास्तव में बात यही है की जो जिससे सूक्ष्म होती है वह उसमें व्यापक हो जाती है। ब्रह्मा चूँकि सबसे अति सूक्ष्म है इसलिए वह सर्वव्यापक है। यह उत्तर सुन कर पंडित जी की जिज्ञासा शांत हो गयी। आगे पंडित जी ने पुछा जीव ब्रह्मा की भिन्नता में कोई वेद प्रमाण बताएँ। स्वामी

जी ने कहा यजुर्वेद का 40वां अध्याय सारा जीव ब्रह्मा का भेद बतलाता है। इस प्रकार अपनी शंकाओं का समाधान कर पंडित जी वापस आकार वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लग गए।

शुद्धि के रण में:-कोट छुटा डेरा गाजी खान (अब पाकिस्तान) में कुछ हिन्दू युवक मुस्लमान बनने जा रहे थे। पंडित जी के व्याख्यान सुनने पर ऐसा रंग चड़ा की आर्य बन गए और इस्लाम को तिलांजलि दे दी। इनके नाम थे महाशय चोखानंद, श्री छबीलदास व महाशय खूबचंद जी, जब तीनों आर्य बन गए तो हिन्दुओं ने उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया। कुछ समय के बाद महाशय छबीलदास की माता का देहांत हो गया। उनकी अर्थी को उठाने वाले केवल ये तीन ही थे। महाशय खूबचंद की माता उन्हें वापस ले गयी। आप कमरे का ताला तोड़ कर वापिस संस्कार में आ मिले। तीनों युवकों ने वैदिक संस्कार से दाह कर्म किया। पौराणिकों ने एक चल चली यह प्रसिद्ध कर दिया की आर्यों ने माता के शव को भुन कर खा लिया है। यह तीनों युवक मुसलमान बन जाये तो हिन्दुओं को कोई फरक नहीं पड़ता था परन्तु पंडित लेखराम की कृपा से वैदिक धर्म बन गए तो दुश्मन बन गए। इस प्रकार की मानसिकता के कारण तो हिन्दू आज भी गुलामी की मानसिकता में जी रहे हैं।

जम्मू के श्री ठाकुरदास मुस्लमान होने जा रहे थे। पंडित जी उनसे जम्मू जाकर मिले और उन्हें मुसलमान होने से बचा लिया।

1891 में हैदराबाद सिंध के श्रीमंत सूर्यमल की संतान ने इस्लाम मत स्वीकार करने का मन बना लिया। पंडित पूर्णानंद जी को लेकर आप हैदराबाद पहुँचे। उस धनी परिवार के लड़के पंडित जी से मिलने के लिए तैयार नहीं थे। पर आप कहा मानने वाले थे। चार बार सेठ जी के पुत्र मेवाराम जी से मिलकर यह आग्रह किया की मौलवियों से उनका शास्त्रार्थ करवा दे। मौलवी सैयद मुहम्मद अली शाह को तो प्रथम बार में ही निरुत्तर कर दिया। उसके बाद चार और मौलवियों से पत्रों से विचार किया। आपने

उनके सम्मुख मुस्लमान मौल्वियों को हराकर उनकी धर्म रक्षा की।

वही सिंध में पंडित जी को पता चला की कुछ युवक ईसाई बनने वाले हैं। आप वहां पहुंच गए और अपने भाषण से वैदिक धर्म के विषय में प्रकाश डाला। एक पुस्तक आदम और इव पर लिख कर बांटी जिससे कई युवक ईसाई होने से बच गए।

गंगोह जिला सहारनपुर की आर्यसमाज की स्थापना पंडित जी से दीक्षा लेकर कुछ आर्यों ने 1885 में करी थी। कुछ वर्ष पहले तीन अग्रवाल भाई पतित होकर मुसलमान बन गए थे। आर्य समाज ने 1884 में उन्हें शुद्ध करके वापिस वैदिक धर्म बना दिया। आर्य समाज के विरुद्ध गंगोह में तूफान ही आ गया। श्री रेहतूलाल जी भी आर्यसमाज के सदस्य थे। उनके पिता ने उनके शुद्धि में शामिल होने से मना किया पर वे नहीं माने। पिता ने बिरादरी का साथ दिया। उनकी पुत्र से बातचीत बंद हो गयी। पर रेहतूलाल जी कहा मानने वाले थे उनका कहना था गृह त्याग कर सकता हूँ पर आर्यसमाज नहीं छोड़ सकता हूँ। इस प्रकार पंडित लेखराम के तप का प्रभाव था की उनके शिष्यों में भी वैदिक सिद्धांत की रक्षा हेतु भावना कूट-कूट कर भरी थी।

घासीपुर जिला मुज्जफरनगर में कुछ चौधरी मुस्लमान बनने जा रहे थे। पंडित जी वह एक तय की गयी तिथि को पहुँच गए। उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और साथ में मुछे भी थी। एक मौलाना ने उन्हें मुस्लमान समझा और पूछा क्यों जी यह दाढ़ी तो ठीक हैं पर इन मुछो का क्या राज हैं। पंडित जी बोले दाढ़ी तो बकरे की होती हैं मुछे तो शेर की होती हैं। मौलाना समझ गया की यह व्यक्ति मुसलमान नहीं हैं। तब पंडित जी ने अपना परिचय देकर शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। सभी मौलानाओं को परास्त करने के बाद पंडित जी ने वैदिक धर्म पर भाषण देकर सभी चौधरियों को मुस्लमान बनने से बचा लिया।

1866 की एक घटना पंडित लेखराम के जीवन से हमें सर्वदा प्रेरणा देने वाली बनी रहेगी। पंडित जी प्रचार से वापिस आये तो उन्हें पता चला की उनका पुत्र बीमार हैं। तभी उन्हें पता चला की मुस्तफाबाद में पाँच हिन्दू मुस्लमान होने वाले हैं। आप घर जाकर दो

घंटों में वापिस आ गए और मुस्तफाबाद के लिए निकल गए। अपने कहाँ की मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पाँच पुत्र अधिक प्यारे हैं। पीछे से आपका सवा साल का इकलोता पुत्र चल बसा। पंडित जी के पास शोक करने का समय कहाँ था। आप वापिस आकार वेद प्रचार के लिए वजीराबाद चले गए।

पंडित जी की तर्क शक्ति गजब थी। आपसे एक बार किसी ने प्रश्न किया की हिन्दू इतनी बड़ी संख्या में मुस्लमान कैसे हो गए। अपने सात कारण बताये। 2. मुस्लमान आक्रमण में बलातपूर्वक मुसलमान बनाया गया 3. मुसलमानी राज में जर, जोरू व जमीन देकर कई प्रतिष्ठित हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया 4. इस्लामी कल में उर्दू, फारसी की शिक्षा एवं संस्कृति की दुर्गति के कारण बने। 5. हिन्दुओं में पुनर्विवाह न होने के कारण व सती प्रथा पर रोक लगने के बाद हिन्दू औरतो ने मुसलमान के घर की शोभा बढ़ाई तथा अगर किसी हिन्दू युवक का मुसलमान स्त्री से सम्बन्ध हुआ तो उसे जाति से निकल कर मुस्लमान बना दिया गया। 6. मूर्तिपूजा की कुरीति के कारण कई हिन्दू विधर्मी बने। 7. मुसलमानी वेश्यायों ने कई हिन्दुओं को फंसा कर मुसलमान बना दिया। 8. वैदिक धर्म का प्रचार न होने के कारण मुसलमान बने।

अगर गहराई से सोचा जाये तो पंडित जी ने हिन्दुओं को जाति रक्षा के लिए उपाय बता दिए हैं, अगर अब भी नहीं सुधरे तो हिन्दू कब सुधरेगे।

पंडित जी और गुलाम मिर्जा अहमद:-पंडित जी के काल में कादियान, जिला गुरुदासपुर पंजाब में इस्लाम के एक नए मत की वृद्धि हुई जिसकी स्थापना मिर्जा गुलाम अहमद ने करी थी। इस्लाम के मानने वाले मुहम्मद साहिब को आखिरी पैगम्बर मानते हैं, मिर्जा ने अपने आपको कभी कृष्ण, कभी नानक, कभी ईसा मसीह कभी इस्लाम का आखिरी पैगम्बर घोषित कर दिया तथा अपने नवीन मत को चलने के लिए नई नई भविष्यवाणियाँ और इल्हामो का ढोल पीटने लगा।

एक उदहारण मिर्जा द्वारा लिखित पुस्तक 'वही हमारा कृष्ण' से लेते हैं इस पुस्तक में लिखा है, उसने (ईश्वर ने) हिन्दुओं की उन्नति और सुधर के

लिए निष्कलंकी अवतार को भेज दिया है जो ठीक उस युग में आया है जिस युग की कृष्ण जी ने पाहिले से सुचना दे रखी है। उस निष्कलंकी अवतार का नाम मिर्जा गुलाम अहमद है जो कादियान जिला गुरुदासपुर में प्रकट हुए हैं। खुदा ने उनके हाथ पर सहस्रो निशान दिखाये हैं। जो लोग उन पर इमान लेट हैं उनको खुदा ताला बड़ा नूर बख्शाता है। उनकी प्रार्थनाएं सुनता है और उनकी सिफारिश पर लोगो के कष्ट दूर करता है। प्रतिष्ठा देता है। आपको चाहिए की उनकी शिक्षाओ को पढ़ कर नूर प्राप्त करे। यदि कोई संदेह हो तो परमात्मा से प्रार्थना करे की हे परमेश्वर? यदि यह व्यक्ति जो तेरी और से होने की घोषणा करता है और अपने आपको निष्कलंकी अवतार कहता है। अपनी घोषणा में सच्चा है तो उसके मानने की हमें शक्ति प्रदान कर और हमारे मन को इस पर इमान लेने को खोल दे। पुन आप देखेंगे की परमात्मा अवश्य आपको परोक्ष निशानों से उसकी सत्यता पर निश्चय दिलवाएगा। तो आप सत्य हृदय से मेरी और प्रेरित हो और अपनी कठिनाइयों के लिए प्रार्थना करावे अल्लाह ताला आपकी कठिनाइयों को दूर करेगा और मुराद पूरी करेगा। अल्लाह आपके साथ हो। पृष्ठ 6.7.8 वही हमारा कृष्ण।

पाठकगन स्वयं समझ गए होंगे की किस प्रकार मिर्जा अपनी कुटिल नीतिओ से मासूम हिन्दुओं को बेवकूफ बनाने की चेष्टा कर रहा था पर पंडित लेखराम जैसे रणवीर के रहते उसकी दाल नहीं गली।

पंडित जी सत्य असत्य का निर्णय करने के लिए मिर्जा के आगे तीन प्रश्न रखे।

1. पहले मिर्जा जी अपने इल्हामी खुदा से धारावाही संस्कृत बोलना सीख कर आर्यसमाज के दो सुयोग्य विद्वानों पंडित देवदत्त शास्त्री व पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा का संस्कृत वार्तालाप में नाक में दम कर दे।

2. दर्शनों में से सिर्फ तीन के आर्ष भाष्य मिलते हैं। शेष तीन के अनुवाद मिर्जा जी अपने खुदा से मंगवा ले तो मैं मिर्जा के मत को स्वीकार कर लूँगा।

3. मुझे 20 वर्ष से बवासीर का रोग है। यदि तीन मास में मिर्जा अपनी प्रार्थना शक्ति से उन्हें ठीक कर दे तो मैं मिर्जा के पक्ष को स्वीकार कर लूँगा।

पंडित जी ने उससे पत्र लिखना जारी रखा। तंग

आकर मिर्जा ने लिखा की यहीं कादियान आकर क्यों नहीं चमत्कार देख लेते। सोचा था की न पंडित जी का कादियान आना होगा और बला भी टल जाएगी। पर पंडित जी अपनी धुन के पक्के थे मिर्जा गुलाम अहमद की कोठी पर कादियान पहुँच गए। दो मास तक पंडित जी कादिया में रहे पर मिर्जा गुलाम अहमद कोई भी चमत्कार नहीं दिखा सका।

इस खीज से आर्यसमाज और पंडित लेखराम को अपना कटर दुश्मन मानकर मिर्जा ने आर्यसमाज के विरुद्ध दुष्प्रचार आरंभ कर दिया।

मिर्जा ने ब्राहिने अहमदिया नामक पुस्तक चंदा मांग कर छपवाई। पंडित जी ने उसका उत्तर तकजीब ब्राहिने अहमदिया लिखकर दिया। मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या (आर्यों की आंख का सुरमा) लिखा जिसका पंडित जी ने उत्तर नुस्खाये खबते अहमदिया (अहमदी खबत का ईलाज) लिख कर दिया। मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या में यह भविष्यवाणी करी की एक वर्ष के भीतर पंडित जी की मौत हो जाएगी। मिर्जा की यह भविष्यवाणी गलत निकली और पंडित इस बात के 11 वर्ष बाद तक जीवित रहे।

पंडित जी की तपस्या से लाखों हिन्दू युवक मुस्लमान होने से बच गए। उनका हिन्दू जाति पर सदा उपकार रहेगा।

पंडित जी का अमर बलिदान:- मार्च 1869 में एक व्यक्ति पंडित लेखराम के पास आया। उसका कहना था की वो पहले हिन्दू था बाद में मुस्लमान हो गया अब फिर से शुद्ध होकर हिन्दू बनना चाहता है। वह पंडित जी के घर में ही रहने लगा और वही भोजन करने लगा। 6 मार्च 1869 को पंडित जी घर में स्वामी दयानंद के जीवन चरित्र पर कार्य कर रहे थे। तभी उन्होंने एक अंगरई ली की उस दुष्ट ने पंडित जी को छुरा मार दिया और भाग गया। पंडित जी को हस्पताल ले जाया गया जहाँ रात को दो बजे उन्होंने प्राण त्याग दिए। पंडित जी को अपने प्राणों की चिंता नहीं थी उन्हें चिंता थी तो वैदिक धर्म की। उनका आखिरी सन्देश भी यही थे की 'तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बंद नहीं होना चाहिए। पंडित जी का जीवन आज के हिन्दू युवको के लिए प्रेरणा दायक है की कभी विधर्मियो से डरे नहीं और जो निशक्त हैं उनका सदा साथ देवे।

ऋषि बोध दिवस पर

-प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तथा अन्तिम चरण में भारत का भाग्य एक नया मोड़ ले रहा था। सदियों से सुप्त पड़ी इस देश की चेतना अव्यक्त से व्यक्त की तरफ, सुषुप्ति से जागृति की तरफ, जड़ता से प्रगति की तरफ अग्रसर हो रही थी। इस जागृत चेतना की अभिव्यक्ति का क्या रूप था? सदियों से सोई पड़ी यह चेतना जब भारत के नव-प्रभात में अँगड़ाई लेकर आँख खोलने लगी, तब 1772 में बंगाल में राजा राममोहन राय ने और 1834 में रामकृष्ण परमहंस तथा उसी काल के आसपास स्वामी विवेकानन्द ने जन्म लिया, 1824 में गुजरात में महर्षि दयानन्द ने जन्म लिया, 1863 में मद्रास में थियोसोफिकल सोसायटी ने जन्म लिया, 1884 में महाराष्ट्र में प्रार्थना-समाज ने और दक्खन-एजुकेशन-सोसायटी ने जन्म लिया और इसी काल में मुसलमानों में चेतना के संसार के लिए सर सैयद अहमद ने जन्म लिया। ये सब भारत की विभूतियाँ थी और इस देश के नव-निर्माण का सपना लेकर गंगा और हिमालय की इस देव भूमि का सदियों का संकट काटने के लिए प्रकट हुई थी।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में जिन विभूतियों ने जन्म लिया उनमें से ऋषि दयानन्द पर हम आज लिख रहे हैं। ऋषि दयानन्द आए परन्तु वे समय के दास बनकर नहीं आये, समय को अपना दास बनाने के लिए आए। महापुरुष यही-कुछ करते हैं। हम समझते हैं कि हमें जमाने के अनुसार चलना है, महापुरुष जमाने की गर्दन पकड़कर उसे अपने अनुसार चलाते हैं। वे खुद नहीं बदलते, जमाने को बदलते हैं। तोयनबी नामक प्रसिद्ध समाज-शास्त्री ने कहा है कि यह जीवन एक ललकार है, एक चैलेंज है, आह्वान है। साधारण लोग इस ललकार को सुनकर, इस चैलेंज और आह्वान को सुनकर जीवन-संग्राम से भाग खड़े होते हैं, जमाने का रंग पकड़ लेते हैं, महापुरुष जीवन की ललकार का, जीवन के आह्वान का उत्तर देते हैं। वे इस चैलेंज का जवाब देते हुए जीवन की समस्याओं के साथ झूक जाते हैं, जूझते हुए प्राणों की बाजी लगा देते हैं, परन्तु इस संघर्ष में पीठ नहीं दिखाते, जमाने को पलट देते हैं।

ऋषि दयानन्द जब इस देश के रणांगन में उतरे, तब उन्हें चारों तरफ ललकार-ही-ललकार सुनाई दी, चारों तरफ चैलेंज ही चैलेंज नजर आए। सबसे बड़ा चैलेंज था विदेशी राज्य का। उनके सामने ललकार उठी-क्या विदेशी राज्य को बरदाश्त करोगे? ऋषि दयानन्द की आत्माने जवाब दिया-विदेशी राज्य को बर्दाश्त नहीं करूंगा। उन्होंने राजस्थान के राजाओं को अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह करने के लिए तैयार करना शुरू किया। ऋषि दयानन्द के जीवन का बहुत बड़ा भाग राजस्थान के राजाओं को संगठित करने में बीता।

1873 में इस देश के गवर्नर जनरल लॉर्ड नॉर्थब्रुक थे। कलकत्ता के लॉर्ड बिशप ने लॉर्ड नॉर्थब्रुक तथा ऋषि दयानन्द में एक भेंट का आयोजन किया। इस भेंट में दोनों में जो बातचीत हुई उसका विवरण लॉर्ड नॉर्थब्रुक ने अपनी डायरी में लिखा। यह डायरी लन्दन में इण्डिया-हाउस में आज भी सुरक्षित है।

लॉर्ड नॉर्थब्रुक ने कहा-“पण्डित दयानन्द, आप मत-मतान्तरों का खण्डन करते हैं। हिन्दुओं, ईसाइयों, मुसलमानों के धर्म की आलोचना करते हैं। क्या आप सरकार से किसी प्रकार की सुरक्षा नहीं चाहते।

ऋषि दयानन्द ने उत्तर दिया-“अंग्रेजी राज्य में सबको अपने विचार प्रकट करने की पूरी स्वतन्त्रता है इसलिए मुझे किसी से किसी प्रकार का खतरा नहीं है।” इस पर खुश होकर गवर्नर जनरल ने कहा कि “अगर ऐसी बात है तो आप अपने व्याख्यानों में अंग्रेजी राज्य के उपकारों का वर्णन कर दिया कीजिए। अपने व्याख्यान के प्रारम्भ में जो आप ईश्वर-प्रार्थना किया करते हैं, उसमें देश पर अखण्ड अंग्रेजी शासन के लिए भी प्रार्थना कर दिया कीजिए।”

यह सुनकर ऋषि दयानन्द ने उत्तर दिया-“श्रीमान् जी, यह कैसे हो सकता है? मैं तो सायं-प्रातः ईश्वर से यह प्रार्थना किया करता हूँ कि इस देश को विदेशियों की दासता से शीघ्र मुक्त करो।”

लॉर्ड नॉर्थब्रुक ने इस घटना का उल्लेख अपनी उस साप्ताहिक डायरी में किया जो वे भारत से

प्रति-सप्ताह हर मैजेस्टी महारानी विक्टोरिया को भेजा करते थे। इस घटना का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं कि “मैंने इस बागी फकीर की कड़ी निगरानी के लिए गुप्तचर नियुक्त कर दिए हैं।”

देश की परतन्त्रता ही ऋषि दयानन्द के सम्मुख चैलेंज बनकर नहीं खड़ी थी, वे अपने समाज में जिधर नजर उठाते थे उन्हें चैलेंज ही चैलेंज दीख पड़ते थे, उनके कानों में देश की समस्याओं की ललकार-ही-ललकार सुनाई पड़ती थी। वे महापुरुष इसलिए थे क्योंकि वे किसी चैलेंज को सामने देखकर दम तोड़कर नहीं बैठते थे, किसी ललकार को सुनकर चुप नहीं रहते थे। समाज की हर समस्या से वे जूझे, हर फंड पर डटे, हर अखाड़े में छाती तानकर खड़े रहे। कौन-सी समस्या थी जो इस देश के महावृक्ष को घुन की तरह नहीं खा रही थी? स्त्रियों को पर्दे में बन्द रखा जाता था, उन्हें शिक्षा का अधिकार नहीं था। ऋषि दयानन्द ने पहले-पहल आवाज उठाई कि स्त्रियों को वे सब अधिकार हैं जो पुरुषों को हैं। जैसे वेद-मन्त्रों का साक्षात्कार करनेवाले पुरुष ऋषि हैं, वैसे वेद-मन्त्रों का साक्षात् करनेवाली स्त्री ऋषिकाएँ भी हैं। ऋषि दयानन्द ने “स्त्रीशूद्रौ नाथीयाताम्” के नारे को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। ‘शूद्र’ संज्ञा देकर समाज के जिस वर्ग के साथ हम अन्याय तथा अत्याचार कर रहे थे, जिन्हें हमने मनुष्यता के अधिकारों से भी वंचित कर दिया था, उनके अधिकारों की रक्षा के लिए वे उठ खड़े हुए। ऋषि दयानन्द ने सामाजिक व्यवस्था के लिए एक नया दृष्टिकोण दिया। उन्होंने जन्म की जात-पात को मानने से इन्कार कर दिया। जब जन्म से जात-पात ही नहीं, न कोई जन्म से बड़ा न जन्म से छोटा, तब शूद्र कौन और अछूत कौन? समय था जब समाज के एक वर्ग के लिए ‘अछूत’ शब्द का प्रयोग किया जाता था।

आज हम उसके लिए ‘हरिजन’ शब्द का प्रयोग करते हैं। परन्तु किसी को हम-‘अछूत’ कहें, या ‘हरिजन’ कहें-अर्थ दोनों का एक ही है, वह हमसे अलग है, एक पृथक वर्ग का है, हमारे समाज का हिस्सा नहीं है। आर्यसमाज ने ‘अछूत’ शब्द का प्रयोग नहीं किया, ‘हरिजन’ शब्द का प्रयोग भी नहीं किया।

आर्यसमाज ने ‘दलित’ शब्द का प्रयोग किया। ‘दलित’-अर्थात्, जिसे मैंने दल रखा है, जिसके अधिकारों को मैंने ठुकरा रखा है। ‘अछूत’ शब्द में जिसे ‘अछूत’ कहा गया उसे बुरा माना गया, ‘दलित’ शब्द में मैंने दूसरे को दबाया इसीलिए बुरा माना गया। ये दोनों शब्द एक ही भाव को व्यक्त करते हैं, परन्तु दोनों में दृष्टिकोण कितना भिन्न हो जाता है! आर्यसमाज ने इस बात को समझा कि जब हम ‘अछूत’ शब्द का, या ‘हरिजन’ शब्द का प्रयोग करते हैं, तब हम उन्हें समाज की समस्या ही बने रहने देते हैं, चैलेंज चैलेंज ही बना रहात हैं। यही कारण है कि पहले ‘अछूत’ एक वर्ग बना हुआ था, अब ‘हरिजन’ एक वर्ग बन गया है, और समाज के एक पृथक वर्ग के तौर पर अपने अधिकार माँगता है। जब तक हम ‘अछूत’ या ‘हरिजन’ बने रहेंगे तभी तक तो विशेष अधिकारों की मांग कर सकेंगे! इसलिए जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं उस पर तो ‘अछूत’ या ‘हरिजन’ बने रहना नफे का सौदा है। आज अनेक ब्राह्मण बालक अपने को ‘अछूत’ या ‘हरिजन’ कहलाना पसन्द करते हैं क्योंकि उससे उन्हें छात्रवृत्ति मिलती है। राजनीति के अखाड़े के अनेक उम्मीद-वार अपने को ‘अछूत’ या ‘हरिजन’ सिद्ध करने के लिए अदालतों में दौड़ते हैं क्योंकि इससे उन्हें असेम्बली या पार्लियामेंट की मैम्बरी मिलती है। परन्तु इससे क्या समाज की समस्या हल होगी? ऋषि दयानन्द इस समस्या से जूझे थे। उन्होंने समाज के शब्दकोष से ‘अछूत’ शब्द को ही हटा दिया था।

समाज जीता-जागता एक चैलेंज है, चारों तरफ से ललकार है, आह्वान है, पुकार है। हम इस चैलेंज का जवाब, इस ललकार और आह्वान का प्रत्युत्तर देंगे या नहीं देंगे? हम समाज के चैलेंज को देखते हुए भी नहीं देखते, ललकार को सुनते हुए भी नहीं सुनते। शरीर में पीड़ा हो, उसे जो अनुभव न करे वह जीवित नहीं मृत है, समाज के शरीर में रोग हो, उसे जो दूर करने के लिए छटपटाने न लगे वह मृत-समान है। ऋषि दयानन्द ने समाज के शरीर की पीड़ा को, इसके रोग को अनुभव किया, इसीलिए वे जीवित थे। उन्हें तो अपने समय का सारा समाज एक चैलेंज के रूप में दीखा। हिन्दुओं का रूढ़िवाद एक महान् चैलेंज

था। जहाँ देखो वहाँ प्रथा की दासता, रूढ़ि की गुलामी, जो चला आ रहा है, उससे इधर-उधर नहीं जा सकते। ऋषि दयानन्द ने रूढ़िवाद की इस थोथी दीवार को एक धक्के में गिरा दिया। अगर पौराणिक धर्म उन्हें एक चैलेंज के रूप में दीख पड़ा तो ईसाइयत और इस्लाम भी उन्हें चैलेंज देता हुआ दीख पड़ा। हिन्दुओं की जड़ जहाँ अपने कर्मों से खोखली हो रही थी, वहाँ ईसाइयत तथा इस्लाम भी उसे कमजोर करने में कुछ उठा नहीं रख रहे थे। ऋषि दयानन्द जहाँ अपनों से जूझे वहाँ बाहरवालों से भी उसी तरह से जूझे। वे पौराणिक मतवादियों से, ईसाइयों से, मुसलमानों से-सबसे जूझ पड़े। दुनिया-भर के गंद को जला डालने की उनमें हिम्मत थी। वह एक सूत्र था जो दुनिया-भर के रूढ़िवाद से टक्कर लेने के लिए उठ खड़े हुए थे।

ऐसे लोग दुनिया को बदल देने के लिए पैदा हुआ करते हैं। वे आते हैं, एक नई लहर चला जाते हैं, संसार को एक नया दृष्टिकोण दे जाते हैं। पुराना जड़वाद उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता, और वे उस पुराने जड़वाद को बर्दाश्त नहीं कर सकते। वे जहर उगलते हैं, आग उगलते हैं, कूड़े-कर्कट को राख करते चले जाते हैं। लेकिन यह दुनिया भी ऐसी है कि उन्हें देर तक बर्दाश्त नहीं कर

सकती। वे भी इसके लिए तैयार होते हैं। सुकरात अपने जमाने को बदलने के लिए आया था, उसे जहर का प्याला पीना पड़ा। ईसामसीह एक नई दुनिया का सपना लेकर आया था उसे जिन्दा सूली पर लटक जाना पड़ा। दयानन्द अपने देश और जाति को नए ढाँचे में ढालने को आया था, उसे दूध में घुला जहर पीकर प्राण गँवाने पड़े। गांधी एक नया संसार बना रहा था, उसे गोली का शिकार हो जाना पड़ा। यह दुनिया, इसको बदल देने वालों को बर्दाश्त नहीं करती। परन्तु जहर देनेवाले, गोली चलानेवाले, तलवार उठाने वाले देखते हैं और हाथ मल-मलकर देखते हैं कि जहर पीकर, गोली खाकर और प्राण देकर जो चले जाते हैं वे अपने पीछे एक ऐसी शक्ति छोड़ जाते हैं जो एक नवीन संसार का निर्माण कर देती है, एक नई दुनिया बना देती है। ऋषि दयानन्द भी अपने जमाने से जूझे, जमाने ने उन्हें जहर दे दिया, लेकिन जहर पीने के बाद विदाई की वेला में उनसे जो शक्ति की धारा फूटी उसने सदियों से चित पड़ी हुई इस भूमि का नक्शा ही बदल दिया। परमात्मा करे, हमारा देश भारत, महर्षि दयानन्द के सपनों का साकार रूप होकर महानता में हिमालय-सा, पवित्रता में गंगा-सा और विश्व में शान्ति की धारा बहाने में चन्द्रमा सा उठ खड़ा हो।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं—

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरांत जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य-उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा-खुर्मुपुर रोड़, फर्रुखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

धर्मवीर हकीकत राय पर विशेष

-हर्ष कुमार

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट कह दिया है कि जब-जब धरती पर धर्म की हानि होती है और अधर्म बढ़ता है, तब-तब मैं अवतार धारण करता हूँ। देश प्रेम हो अथवा धर्म प्रेम यदि वह सच्चा है तो वह किसी बलिदान से कम नहीं होता। एक व्यक्ति के लिए देश-धर्म उसके माता-पिता एवं गुरु से बढ़कर होता है। दूसरी बात कि जिस धर्म में करुणा, दया और परोपकार की भावना रहती है, वह सर्वमान्य हो जाता है। जब किसी देश में विदेशी आक्रांता प्रवेश करती हैं तो उसकी मानसिकता दूषित होती है। वे विजयी देश में लूट-पाट, मार-धाड़ मचाकर जनता को भयभीत करने का प्रयास करते हैं। लोगों के धर्म को बलात् बदलने का प्रयास करते हुए जनसामान्य की सहानुभूति खो देते हैं। यही कारण होता है कि लोग उन्हें कभी भी स्वीकार नहीं करते। ऐसे में कोई देवता वीरपुरुष अथवा बलिदानी के रूप में अवतरित होता है।

भारत ने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया, किसी के धर्म अथवा संस्कृति को परिवर्तन करने का कार्य नहीं किया है। भारत सदा सहिष्णु और धर्मनिरपेक्ष बना रहा है। लेकिन हमारे देश में जितने भी आक्रमणकारी आए सब ने हमारे धर्म और हमारी संस्कृति को बलात् बदलने का प्रयास किया। काश वे 'मन जीते जग जीत' के मर्म की विमल व्याख्या को जान पाते। इस भावना को न मंगोलो ने समझा न अंग्रेजों ने ही। इन विदेशी आक्रान्ताओं ने हमारे हिंदू धर्म को बलात् अपने धर्म में परिवर्तित करने का हठ ठाने रखा। ऐसे में आवश्यक था कि उनके अत्याचारों के सामने पर्वत बनकर खड़े होने वाले वीरों का अवतरण होता और वे अपना बलिदान देकर शेष जाति का मार्गदर्शन करते। समय-समय पर माँ भारती ने ऐसे वीर पुरुषों को उत्पन्न किया, राणाप्रताप, वीर शिवाजी, गुरु गोविंदसिंह, लक्ष्माणदास बंदा बैरागी। धर्मनिष्ठ लालनाओं की भी कमी नहीं रही है, रणचण्डी, रानी लक्ष्मीबाई इत्यादि कितने ही नाम लिए जा सकते हैं। ठीक इसी प्रकार धर्म के नाम पर शहीद हुए किशोर बालक वीर हकीकत को कौन देश-वासी नहीं जानता, जिसने अपने पवित्र धर्म और मृत्यु दोनों में से मृत्यु का वरण किया था।

धर्मवीर हकीकत राय सियालकोट (अब पाकिस्तान) में पिताश्री भागमल और माताश्री गौरा के घर में सन 1724 में अवतरित हुए। यह नगर तत्कालीन पंजाब के उत्तर-पूर्व की ओर बसा था, जिसे राजा शालीवाहन अथवा साल्व ने बसाया था। यह दादा नंदलाल पुरी का क्षत्रिय परिवार था। समय आने पर पिता जी ने इसे समय की राजभाषा सीखने और विद्या-ग्रहण के लिए मकतब में भेजा था। बालक बड़ा होनहार, वीर, धीर-गंभीर, मृदु-भाषी और ओजस्वी चिंतन वाला था। तत्कालीन समाज में शादी तरूणावस्था में कर दी जाती थी। वीर बालक की शादी का प्रस्ताव बटालानगर में रखा गया। इस हेतु दादा नंदलाल जी, पिता श्री भागमल और एक नाई बटाला नगर में पधारे थे, अतः श्रीयुत किशनचंद उप्पल क्षत्रिय की सुन्दर कन्या लक्ष्मीदेवी से रिश्ता तय हो गया था।

अध्ययनरत रहते कई वर्ष बीत चुके थे कि एक दिवस मकतब में उत्पात मच गया। मुस्लिम बच्चों के साथ हकीकत की धर्म-चर्च हो रही थी। हम-उग्र बच्चे आपस में उलझ पड़े। मामूली झगड़ा था, लेकिन मुस्लिम बच्चों ने माता दुर्गा के नाम पर अपशब्द कह दिए। इस पर हकीकतराय ने कहा कि यदि ऐसे ही अपमान भरे शब्द वह मोहम्मद साहब की बेटी फातिमा की शान में प्रयोग किए जाएँ, तो आपको कितना कष्ट होगा। यह योग्य बात भी बच्चों और मौलवी जी से सहन नहीं की गई। इसे लेकर झगड़ा बढ़ा दिया गया।

चेतन मन साहसी किशोर भी डटा रहा। इधर मौलवी, मुल्ला और काजी सब एक हो गए। यह मामला स्याल के हाकिम अमीरबेग तक जा पहुँचा, तो उसने इसका चालान बनाकर लाहौर के सूबेदार को भिजवा दिया। बात मामूली थी, तूल दे दी गई। काजी ने फैसला सुना दिया।

ऐ किशोर! मुस्लिम बनो,
छोड़ो हिन्दू धर्म।
वरणा मौत कबूल हो,
नहीं दूसरा मर्म॥

फैसला सुनाते ही पूरे हिन्दुस्तान में रोष की लहर फैल गई। हिन्दू जाति त्राहि-त्राहि कर उठी। एक बच्चे बेकसूर बच्चे को इतनी बड़ी सजा! मुस्लिम

हाकिम बार-बार वीर बालक को बहकाते रहे। उसमें भय उत्पन्न करने की कोशिश में लगे रहे। बालक था कि धर्म-ईमान का पक्का निकला। उसने स्पष्ट कह दिया कि वह मृत्यु से कदाचित डरता नहीं। जीवन-मरण किसी के हाथ में नहीं होता, न किसी के बस की बात होती है, अतः वह हिन्दू धर्म का त्याग नहीं करेगा। हाथों में पवित्र गीता का ग्रंथ और मन में गीता का ज्ञान हिलोरे लेने लगा।

“नैनं छिन्दति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥”

अ. 2 श. 23.

शरीर तो होता ही नाशवान है। इस शरीर का क्या है? यह तो पुनः प्राप्त हो जाएगा। आत्मा अविनाशी है न मरे, न कटे न जले और न सूखे। ये पाजी लोग मेरी आत्मा को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। इसलिए मैं अपना धर्म नहीं हारूँगा। माता-पिता, भाई-बाँधव, सास-ससुर इत्यादि के मन में कभी धर्म की भावना जागृत होती तो कभी मोह-ममता और ममत्व उन सब की राहें रोक लेता। किशोर बालक वीर धीर गंभीर हुआ हाथों में पवित्र गीता पकड़े अपनों को उपदेश देकर ढाढ़स बँधावाता रहा। उसका अंतर जागृत था, इसलिए वह मृत्यु को गले लगाने के लिए पूर्णतया तैयार रहा। कोई हिचक नहीं, कोई भय नहीं, एकदम निश्चित होकर अपनी आत्मा के लिए नए कलेवर की प्रतीक्षा में खड़ा हकीकत मुस्कुरा दिया कि मूर्ख हाकिमों! तुम मुझे नहीं मार सकते। मेरी आत्मा तो अमर है इस नश्वर शरीर से कैसा लगाव? अतः अपने

देश-धर्म हित सीस कटाना मेरा परम सौभाग्य होगा। आओ! जल्लाद आओ!

मात्र सत्रह वर्ष की अवस्था थी। सन् सत्तरह सौ इकतालिस के माघ मास की वसंत पंचमी का पवित्र दिवस था। पापी, मक्कार और अन्यायी गवर्नर खान बहादुर (जकरिया खान) ने अंततः सीस कतल करने का हुकुम सुना दिया। एक युवा किशोर की कच्ची उम्र अत्याचारों की बली चढ़ा दी गई। ससुरालवालों ने अपने होने वाले दामाद के श्री चरणों में प्रणाम किया। माता-पिता भाई-बाँधवों ने सीने पर पत्थर रख लिए, लेकिन दुर्जन आतताइयों के प्रति नतमस्तक न हुए थे। इधर बटाला नगर में होने वाले पत्नी लक्ष्मीदेवी, अपने होने वाले धर्मवीर साहसी पति के शहीद होने का समाचार मिलते ही, तत्कालीन रीति-नीति की बलिबेदी तैयार करते हुए सती हो गई। वीर हकीकत राय की समाधि लाहौर के पूर्वी छोर में बनी हुई है। इस पवित्र समाधि स्थल पर प्रतिवर्ष वासंत पर भारी मेला लगता है। बटाला नगर में एक विस्तृत उपवन में सती लक्ष्मीदेवी के साथ ही धर्मवीर बालक हकीकत राय की भी सुन्दर एवम् आकर्षक समाधि बनी हुई है। प्रत्येक वर्ष वसंत पंचमी के दिन यहाँ पर भारी मेला लगता है। यहाँ पर विद्वानों द्वारा देश धर्म पर मिटने वालों की शौर्य गाथाओं द्वारा युवाओं का आह्वान किया जाता है। देश-धर्म के नाम पर शहीद होने वाले श्रीगुरु तेग बहादुर जी ने वीर हकीकत के दादा नन्दलाल जी से मिल कर उन्हें उनके पौत्र के शहीद हो जाने पर सात्वना भी दी थी।



हरि ओ३म्

Mata Laxmi Devi Kataria Charitable Trust (Regd.)

(A Registered NGO)

496, Vikaskunj, Vikash Puri, Delhi-110018

Founder Patrons: Late Sh. K.B. Kataria, Late Sh. R.C. Kataria

Board of Trustees: Sh. Ramesh Kr. Kataria, Smt. Raj Kumari Chugh, Sh. Hardayal Kataria

हमारे ट्रस्ट की निःशुल्क सेवाएँ:- (1) गरीब एवं मेधावी विद्यार्थियों को मुफ्त पुस्तकें उपलब्ध कराना। (2) मेधावी छात्रों/छात्राओं को कैश छात्रवृत्ति प्रदान करना। (3) जरूरतमंद विद्यार्थियों को फ्री यूनिफार्म एवं पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराना। (4) निर्धन परिवारों की बेटियों के विवाह में कन्यादान के रूप में योगदान देना। (5) गरीब रोगियों को मुफ्त औषधी एवं जाँच सहयोग उपलब्ध कराना। (6) विद्यालयों में खेल प्रतियोगिता में रूचि व सहायता देना। (7) विभागोष्ठियों एवं सेमिनारों का आयोजन करना। (8) मेधावी छात्र/छात्राओं को द्यूशन फीस में सहायता प्रदान करना। (9) सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना। (10) महिला सशक्तिकरण के लिए भरसक प्रयास करना।

- निवेदक सर्वट्रस्टीगण

महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी

—स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

महात्मा नारायण स्वामी एक क्रान्तिकारी आर्य संन्यासी हुए हैं आपको देखकर निराशा स्वतः भाग जाती है, आपका दिव्यदर्शन भव्य विशाल, तेजस्वी, आभा से युक्त मुखमण्डल, लम्बी दाढ़ी एवं लम्बी जटायें, उत्तरीय वस्त्र से सुशोभित छोटा अधोवस्त्र, हाथ में लोहे का दण्ड, चमकती आँखें गंभीर वाणी, उन्नत ललाट, विशाल भुजाएं, सिंह जैसी गर्जना, मदमस्त युवा जैसी चाल में चलते हुए सैकड़ों लोगों में दूर से ही शोभायान होते थे आपके पीछे-पीछे लोगों की भीड़ चल पड़ती थी। आपका भाषण क्रान्तिकारी होता था आपके भाषण सुनने के लिए हजारों की भीड़ स्वभावतः एकत्र हो जाती थी। एक बार जो आपको सुन लेता था वह आपका पक्का शिष्य हो जाता था। आप आर्य संन्यासियों में सदैव मंच पर शोभायमान होकर सभी आबाल वृद्ध को प्रभावित करते थे।

आपका जन्म बिन्द की जिला फतेहपुर उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपने उच्च शिक्षा प्राप्त कर भारतीय सेना में नौकरी कर ली वहां भी आपको उच्च सम्मान प्राप्त हुआ। आपने आर्य समाज के सम्पर्क में आकर सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा उसी से आपके जीवन में परिवर्तन आया आपने सिगरेट पीना छोड़ दिया फिर आपने देशभक्ति का संकल्प लिया आर्य समाज के विचारों से महर्षि दयानन्द जी के जीवन से आप इतने प्रभावित हुए कि आपने फौज की नौकरी छोड़कर वैराग्य धारण कर लिया पहले आप ब्रह्मचारी के रूप में फिर स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी गुरुकुल एटा से संन्यास की दीक्षा प्राप्त कर म. नारायण स्वामी क्रान्तिकारी के नाम से प्रसिद्ध हो गए आप गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़ के कुलपति पद पर रहे गुरुकुल एटा में भी आप कुछ समय तक निवास करते थे पूरे देश में आपके भाषणों की चर्चा होने लगी उसी क्रम में आपको आर्यसमाज के कार्यक्रमों में लोग बुलाकर अत्यन्त गौरवान्वित होते थे। स्कूल, कॉलेज, गुरुकुलों में युवकों को प्रेरणा देने के लिए आपको अवश्यमेव याद किया जाता था और आप उसमें प्रसन्नतापूर्वक पहुंचते थे।

सर्वप्रथम आपके दर्शनों का सौभाग्य हमें 1971 मार्च मास के वार्षिक उत्सव में गुरुकुल ततारपुर में

हुआ आपके प्रथम दर्शनों से ही लोग आति प्रभावित हुए थे। गुरुकुल में ही आपका आवास था और आपकी सेवा करने का दायित्व भी मुझे ही गुरुजी ने दिया। आप प्रतिदिन 3 किलो दूध 3 छटांग घी तथा मीठा मिलाकर दूध पीते थे। 1 छटांग घी भोजन के समय लेते थे आपकी खुराक अच्छी थी अतः आप उस समय व्यायाम भी अच्छा ही करते थे दौड़ एवं दण्ड भी लगाते थे। बैठकें बहुत कम करते थे। उसी का प्रभाव था कि ऊपर का भाग भारी था और प्राणायाम क्रिया द्वारा ऊर्जा बनाते थे। आपकी दिनचर्या व्यवस्थित थी प्रातः काल उठकर अपना व्यायाम और साधना करके ही प्रातः कालीन अल्पाहार लेते थे जब मैं दूध लेकर गया कि स्वामी जी दूध पी लो तो मेरी ओर देखा और बोले कितना दूध हैं मैंने कहा कि स्वामी जी आप जितना कहें उतना ही आ जायेगा तो बोले कहां से आयेगा? मैंने कहा ग्राम से तब फिर कहा अब यहां कितना है? मैंने कहा सभी अतिथियों के लिए 5 किलो दूध आया है, तब बोले मुझे 3 किलो दूध चाहिए और उसे गर्म करके उसमें 3 छटांग घी डालना फिर मीठा डालकर रख देना 1 किलो अब 1 किलो दोपहर, 1 किलो सायंकाल पीना है समझे मैंने कहा जी समझ गए फिर बोले क्या समझे? फिर मैंने सारी बातें दोहरा दी 3 किलो दूध गर्म करके 3 छटांग घी डालकर मीठा मिलाकर आपको 3 बार पिलाना है, तब वे प्रसन्न होकर बोले ठीक है, जाओ अब तुम पास हो गए हों स प्रकार 3 दिन तक सेवा करने का मेरा यह प्रथम अवसर था। उसके बाद तो लगभग 17 वर्ष तक उनका स्नेह आशीर्वाद और आत्मीयभाव सदैव सर्वत्र सुलभ रहा उस सेवा से सामीप्य बढ़ गया और उनका सदैव आशीर्वाद मिलता रहा।

स्वामी जी निर्भीक संन्यासी थे वे सरकार के विरुद्ध भी अपनी बुलन्द आवाज से लोगों में चेतना जागृत करते थे महर्षि दयानन्द जी द्वारा लिखित स्वमन्तव्यामन्तव्य में मनुष्य की परिभाषा का उदाहरण देकर कहते थे कि सत्यवादी धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, तथा अधर्मी अन्यायी चाहे बलवान-धनवान तो क्या सार्वभौम चक्रवर्ती सम्राट भी क्यों न हो उसका विरोध सदा करता रहे, चाहे प्राण भी क्यों न

चले जाये। इस बात में वे पूरा जोर लगाकर कांग्रेस सरकार का विरोध करते थे, और तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी द्वारा चलाया गया नंसबन्दी अभियान उसके विरोध में तो श्रीमती इन्दिरा जी को कई बार ज्यादा ही कटुभाषण कर देते थे उनपर हमले भी हुए उनके पीछे सी.आई.डी. लगी। उन्हें धमकियां भी मिली पर महर्षि का वह सिपाही बार-बार निन्दन्तु नीति निपुणा। श्लोक का उच्चारण करके कहते थे कि हम धर्मवीर हैं पीछे कदम हटाकर चापलूसी करने वाले नहीं हैं ऐसी उनकी भाषा-भावना भाषण द्वारा प्रतिभासित होती थी। कई बार आर्य समाज के अधिकारी उनके भाषण से घबरा जाते थे कही ऊपर हमारी क्लास न लग जाये कांग्रेसी नेता तो बीच में ही उठकर चले जाते थे ऐसा स्वयं मैंने भी कई बार देखा है।

आर्य समाज, कुचेसर रोड़ जिला-हापुड़ अपने यहां बृहद्आर्य सम्मेलन श्री वेदानन्द आर्य जी के संयोजन में कराता रहा है उसी क्रम में स्वामी जी कई बार क्षेत्रीय आर्य जनता की मांग पर आये हैं उन्हें सुनने के लिए लोग दूर-दूर से आते थे। स्वामी जी अपने उसी प्रवाह में बोलने से संकोच नहीं करते थे। जबकि उस समय श्री लखीराम नगर पूर्व मंत्री स्वयं कांग्रेसी थे विधायक राजेन्द्र जी शर्मा भी उनके विचार सुनने आते थे। बाद में कहते कि स्वामी जी ज्यादा ही कठोर हैं।

स्वामी जी स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी थे। आर्य समाज भोगाँव, जिला-मैनपुरी की रजत जयन्ती का सम्मेलन था वर्ष 1974 फरवरी की बात है आचार्य विश्वश्रवा जी ब्रह्मा पद पर प्रतिष्ठित थे और उसमें आर्य नेता श्री पं. प्रकाशवीर जी शास्त्री भी आये थे। व्यवस्था के लिए मैं आर्य वीरदल के साथियों को लेकर वहां उपस्थित रहा यज्ञ चल रहा था पूज्य स्वामी जी रेलवे स्टेशन से समारोह स्थल तक पैदल आये और बड़े आवेश में बोले मंत्री कौन है यहाँ? मैं दौड़कर गया मंत्री श्री धर्मदेव आर्य सामग्री वालों को बुलाकर ले आया मंत्री ने हाथ जोड़कर नमस्ते की तभी स्वामी जी भड़क उठे तुझे मंत्री किसने बनाया? अगर वह चरण छूकर अभिवादन कर लेता शायद उसे सुनना न पड़ता। स्वामी जी बोले यदि कोई नेता या मंत्री होता तो स्टेशन पर जाकर फूल मालाओं से स्वागत करते-सवारी से लेकर आते संन्यासियों के लिए आर्य समाज में न सम्मान है न व्यवस्था, मंत्री जी बोले व्यवस्था है जी विद्यालय में कक्ष हैं वहीं आप विश्राम करें

आवेश में ही चल देखें तेरी व्यवस्था कैसी है धर्मपाल चल मेरे साथ मैं भी साथ-साथ उनका सामान लेकर चल दिया जहाँ बताया था। वह स्थान उन्हें अच्छा नहीं लगा फिर हमने अपने कक्ष में अपने साथ रहने को कहा तो वे सहर्ष सहमत हो गये। स्नानादि के पश्चात् उनके लिए दुग्धादि की व्यवस्था की गई तो प्रसन्न हो गए। एक सज्जन श्रद्धावश नमस्ते करने आय तो बोले तू बूढ़ा हो गया अभी तक सभ्यता नहीं सीखी अपने गुरुजनों के पास-साधु, संन्यासी के पास कभी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। तब वह गया एक पाव पेड़ा लेकर आया फिर कहा कि ये ब्रह्मचारी हैं पता है व्यायाम करते हैं इन्हें 5 किलो फल लेकर आओ हम भी फलखाकर प्रसन्न हो गए।

ऐसे उदारमना स्वामी जी सैदव बच्चों का ध्यान रखते थे। कहीं कोई त्रुटि करता तो तुरन्त डाँटकर उसे मार्गदर्शन करते थे। एक बार एक आर्यसमाज खेरागढ़ आगरा में उत्सव था उसमें स्वामी जी का विशेष प्रवचन था मुझे व्यायाम प्रदर्शन के लिए बुलाया हुआ था। मंच पर ही कार्यक्रम हुआ। लेकिन जो चार सूत मोटा सरिया गले से मोड़ना था वह मात्र चार फुट का टुकड़ा ले आये मैंने 6 फुट का बताया था। प्रदर्शन के समय जोर लगायें सरिया मुड़े नहीं, लोगों में निराशा हुए मुझे पसीना आ गया तभी स्वामी जी की दृष्टि मेरे पर गई वे बोले धर्मपाल ठहरो। सरिया कितने फुट का होता है मैंने उत्तर दिया 6, 10 फुट होना चाहिए तभी संयोजक को डाँट लगाई। सरिया दूसरा मंगाया तब मोड़ा गया तभी गरजकर बोले भारत केसरी चन्दगीराम पहलवान या दारा सिंह भी आ जाये। इस सरिया को मोड़ नहीं सकता अरे तुम ताली बजाकर घर चले जाओगे, और यह यदि मर गया कहां से ब्र. आयेगा आर्य समाज के लिए इतना भी खर्च नहीं कर सकते।

स्वामी जी के विषय में यह उक्ति सार्थक होती है- “वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमार्पाप”

आपका स्वभाव वज्र (पत्थर) से भी कठोर था और फूलों से भी कोमल था। गुरुकुल सिरसागंज के मुख्याधिष्ठाता गुरुजी का बलिदान 27 जुलाई 1977 को हो गया उनकी शोक सभा में बहुत लोग आर्य नेता संन्यासी आये थे। मा. नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता थी भाषण में स्वामी जी के दोनों रूप साक्षात् दिखाई दे रहे थे। वाणी में ओज था जोश था, आक्रोश था हृदय में कष्ट था, होठों पर पुड़फड़ाहट थी और आंखों में अश्रुधारा थी जो बार-बार रूमाल से पोंछ रहे थे। इस घटना के साक्षी हजारों आज भी जीवित

हैं जो मेरी बात का समर्थन करेंगे। उस दिन स्वामी जी करुणा से परिपूर्ण ओजस् रस में वीरता, गंभीरता का सामञ्जस्य कर रहे थे या स्वयं हो रहा था यह तो प्रभु जाने पर हमें प्रभावित किया कि जो हमेशा वीरता की बात करते थे आज रो रहे हैं पर वाणी में जोश है वह बलिदान संस्था के लिए कैंसर की बीमारी बन गया।

स्वामी जी मुझे उत्साहित करते हुए कहा करते थे धर्मपाल! भारत के गुरुकुलों के जितने भी आचार्य हैं मैं सबसे अधिक आपका सम्मान इसलिए करता हूँ कि आप आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द जी के कार्य को बढ़ाने के लिए मिशनरी भाव से काम करते हैं जो गृहस्थ में है उन्हें बच्चों की चिन्ता है कोई बस अपने तक सीमित है। पर आपके व्यवहार से मुझे खुशी है।

दिल्ली के आर्य महासम्मेलन में जो 1983 में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के रूप में रामलीला मैदान में हुआ था उसमें चौ. चरण सिंह जी भी आये थे। उन्होंने आकर स्वामी जी से आशीर्वाद लिया तब मंच पर चौधरी साहब की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा था कि ऐसा सच्चा आर्य जब देश का प्रधान मंत्री बनेगा तभी भारत का कल्याण हो सकता है, चौधरी जी ने भी संन्यासियों की प्रशंसा में कहा था कि सार्वदेशिक सभा का प्रधान संन्यासी ही होना चाहिए तभी स्वामी आनन्दबोध जी ने संन्यास दीक्षा ली थी कि संन्यासी होना चाहिए तो मैं संन्यासी भी हो गया हूँ। मुझे ही बनाओ या मैं ही बनूँगा जो आप सोचें अथवा समझें यह विषय आपका है। इस प्रकार के निर्भीक संन्यासी का स्मरण करके भी हमारा मनोबल तथा उत्साह बढ़ता है आर्य समाज का कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। स्वामी जी को सदैव विरोधी मारने का षड्यन्त्र करते रहते थे। कई बार वे प्रभु कृपा से बच गए। उसे बताने का समय नहीं है।

आर्य समाज एटा में अचानक बीमार हो गए और उनके देहान्त की सूचना से सभी आर्यजन शोकाकुल हो गए थे। मुझे याद है 1988 में पूज्य पिताश्री पहलवान धनन्तर सिंह जी का 28 अक्टूबर को देहान्त हुआ। हम उसी शोक में थे तभी 3 दिन बाद सूना मिली स्वामी जी भी चले गए। आज ऐसे संन्यासियों का सर्वथा अभाव हो रहा है। उन दिनों "हिन्दू सम्मेलन" भी प्रारम्भ हो गए थे वे बड़े-बड़े सम्मेलनों में जाकर भाषण द्वारा हिन्दु समाज का मनोबल बढ़ाया करते थे आपस में मिलकर रहने की

प्रेरणा देते थे। स्वामी जी गुरुकुल परम्परा के लिए समर्पित थे और लोगों को उसके लिए प्रेरणा प्रदान करते थे। गुरुकुल एटा तथा साधुआश्रम तो उनके नाम से जुड़ गया था लेकिन इधर जहाँ भी गए गुरुकुलों का प्रचार प्रसार ही किया छात्रों को भेजकर वेदविद्या विस्तार में अपना योगदान प्रदान किया ऐसे गुरुकुल प्रेमी महर्षि भक्त, सेनानी के लिए हम सभी गुरुकुलवासी उन्हें नमन करते हैं।

-मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश,
लखनऊ, मो. 9837402192

ओ३म् भजन

दीनानाथ की दया है। बड़ी, भजन कर ले घड़ी दो घड़ी।

1. जीवन यूँ ही बीत जाएगा,
अन्त समय पहला ही रह जाएगा
फिर पढ़ा रोता ही रह जाए घड़ी घड़ी
भजन करले घड़ी दो घड़ी
2. कोई तेरा संगी न साथ देगा
अपना किया ही साथ देगा
फिर तू क्यों भूला है,
पल-पल घड़ी घड़ी
भजन करले घड़ी दो घड़ी
3. सब साजू सामान तेरे धरे रहे जाएगा
गो पशु पक्षी भी बाड़े में खड़े रह जाएगा।
अन्त कोई काम आए ना घड़ी दो घड़ी
भजन करते घड़ी दो घड़ी।
4. जिन के लिए तू झूठ छल करता है रात दिन
वह मुँह मोड़ लेगे आखीर एक दिन
नहीं याद करेगा कोई पल-पल
छीन-छीन घड़ी
भजन कर ले घड़ी दो घड़ी।
5. अब भी समय है दास कुछ तो विचार ले
उस प्रभु की शरण में
कुछ समय गुजार ले
फिर आनन्द आएगा घड़ी पर घड़ी
भजन कर ले घड़ी दो घड़ी
दीनानाथ की दया है बड़ी
भजन कर ले घड़ी दो घड़ी

- पुरुषार्थमुनि आश्रम, बहादुरगढ़

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

चौ. राजपाल सिंह जी निठारी दिल्ली	25000/-
श्रीमती मोनिका जी एवं श्री हर्ष मेहदीरता आदर्श नगर दि.	21000/-
श्रीमती शीला सत्यप्रकाश जी वशिष्ठ शक्तिनगर बहा.	12000/-
श्री श्यामलाल जी गुप्ता एण्ड सन्स काठमण्डौ बहा.	12000/-
श्री आनन्द कुमार जी गुप्ता शालीमार बाग, दिल्ली	10000/-
श्रीमती लक्ष्मीदेवी कटारिया चैरिटेबल ट्रस्ट विकासपुरी.दि.	8000/-
श्री कर्नल राजेन्द्र सहरावत जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	4500/-
श्री सतपाल जी वत्स शिव मन्दिर धर्मशाला, बहादुरगढ़	3100/-
श्री रामप्रताप आर्य डूमरखा कलां नरवाना	3100/-
आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा	3100/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल रोहिणी दिल्ली	3000/-
श्री तुषार जी गुलिया काठमण्डौ बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती राधा देवी जी गोयल मॉडल टाऊन बहादुरगढ़	2000/-
श्री हरकमल जी ओमैक्स सिटी बहादुरगढ़	2000/-
श्री सिद्धान्त जी दलाल सुपुत्र राजवीर जी सैक्टर-6, बहा.	2000/-
गौरव गौतम सुपुत्र श्री वीरेन्द्र गौतम सैक्टर-6, बहा.	1100/-
श्री मोनू जी जून गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़	1100/-
श्री सोमवीर जी दहिया सुपुत्र श्री बलराज जी दहिया बहा.	1100/-
श्री जसवीर सैनी सैनी ऑटो मोबाइल बहादुरगढ़	1100/-
अशोका इंटरनेशनल स्कूल बहादुरगढ़	1100/-
चोगान माता नजफगढ़ रोड, बहादुरगढ़	1100/-
श्री नरेन्द्र जी खत्री दयानन्द नगर, बहा.	1100/-
श्री सत्यपाल जी कानपुर उत्तर प्रदेश	1000/-
श्री जे.के. अग्रवाल जी एम.आई.ई. बहादुरगढ़	600/-
श्री धर्मवीर जी जून गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़	500/-
श्री विकास जी नरूला झज्जर हरियाणा	500/-
श्री कृष्ण गुप्ता जी नई बस्ती बहादुरगढ़	501/-
श्री सुधांशु जी सुपुत्र अंगिरा मुनि जी (सुरेन्द्र) सोलधा, झ.	500/-
श्री शीलचन्द जी ऐकोरेट फैंक्ट्री कसार बहादुरगढ़	500/-
श्री अवधेश कुमार जी सैक्टर-7, बहादुरगढ़	500/-
श्री पुलकित जी सुपुत्र श्री दिनेश जी ठाकरान सै.-6, बहा.	500/-

गौशाला हेतु दान

श्रीमती निर्मला देवी जी शर्मा गुरुनानक कॉलोनी, बहा.	500/-
श्री रमण नरूला जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-

श्री सतीश वर्मा जी ओमैक्स सिटी बहादुरगढ़	500/-
श्री महेन्द्र जी शर्मा मॉडल टाऊन बहादुरगढ़	1000/-
श्री लोकेश पांचाल सुपुत्र श्री रमेश चन्द्र नेहरूपार्क बहा.	1100/-

विविध वस्तुएं

कबीर आश्रम लाईन पर बहादुरगढ़	100 किलो चावल, 25 किलो दाल
श्रीमेश्वरी देवी मन्दिर आश्रम ट्रस्ट बेरी	90 किलो धो
श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर टिकरी कलां दिल्ली	1 टीन सरसों तेल
श्री विनय जी सुपुत्र श्री वेद प्रकाश बहादुरगढ़	100 रुपये 25 किलो चावल, 3.5 किलो दाल
श्रीमती पिसतो देवी पत्नी श्री रामकुमार अग्रवाल कॉलोनी, बहा.	30 किलो आटा, 30 किलो आलू, 5 किलो टमाटर, 500 ग्राम धो
श्री शुक्ला जी नैन पाल मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली	1 टीन सरसों का तेल

विशिष्ट भोजन एक समय का देने वाले

श्री रवि वरूण सुपुत्र श्री महावीर सिंह बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री जगदीश सहवाग बादली रोड, बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री कर्मवीर जी नागपाल झज्जर	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री रोहित कुमार जी राणा अध्यापक कॉलोनी	1 समय का विशिष्ट भोजन

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़, झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-ALLA0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 फरवरी 2019 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें



राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु सात दिवसीय पावन ऊर्जामय



निःशुल्क योग एवम् आसन व्यायाम प्राणायाम स्वास्थ्य सुधार शिविर
तथा

ऋग्वेद बृहद् यज्ञ

सोमवार 25 मार्च से रविवार 31 मार्च 2019 तक

सानिध्यः- स्वामी धर्ममुनि जी महाराज (मुख्यअधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)

योग प्रशिक्षक एवम् यज्ञ ब्रह्माः- श्री स्वामी विदेह योगी, (संस्थापक सर्वाध्यक्ष-स्वस्ति पथ, महर्षि दयानन्द सेवा सदन पिपली रोड, कुरुक्षेत्र हरियाणा)।

वेद पाठः- श्री रवि शास्त्री व श्री ध्रुव शास्त्री (आश्रम)

मुख्य प्रवक्ताः- स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, आचार्य चांद सिंह जी आर्य (आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़) स्वामी सच्चिदानन्द जी (फर्रुखनगर आश्रम), आचार्य खुशी राम जी (दिल्ली)

भजनोपदेशकः पंडित रमेश चन्द्र जी वैदिक (झज्जर), संगीताचार्यः लक्ष्मण प्रसाद जी, श्री रामानन्द जी और आश्रम के ब्रह्मचारी एवम् कन्या गुरुकुल लौवा कलां की ब्रह्मचारिणियां।

दिनचर्या: सोमवार 25 मार्च 2019 को शिविर उद्घाटन सांय 4 बजे। मंगलवार 26 मार्च 2019 प्रातः 5 से 6.30 बजे तक **आसन व्यायाम प्राणायाम अभ्यास**, 7:00 बजे से 9 बजे तक **यज्ञ भजन उपदेश**, सांय 4.30 बजे से 6.30 बजे तक **यज्ञ भजन उपदेश**, रात्रि **मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन**।

नोट- -शिविर मध्य महिलाएं भी भाग ले सकती हैं। ☐ शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान ऋतु अनुसार बिस्तर एवम् काँपी, पैन्, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। ☐ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। ☐ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है।

संयोजकः

राजवीर आर्य, मो. 9811778655

निवेदक

सत्यानन्द आर्य

प्रधान ट्रस्ट, 9313923155

दर्शन कुमार अग्निहोत्री

मन्त्री ट्रस्ट, 9810033799

सत्यपाल वत्सार्थ

उपमन्त्री ट्रस्ट, 9416055359

कन्हैयालाल आर्य

उपप्रधान ट्रस्ट, 9911197073

विक्रमदेव शास्त्री

व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

फरवरी 2019

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

देश साप्ताहिक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि
15 हनुमान रोड नई दिल्ली
पि. 110001

बृहद् सद्भावना गायत्री महायज्ञ की सुन्दर झलकियां (विवरण पृष्ठ 4 पर)

